बेस्ट ऑफ
जैमिनी हरियाणवी



बेस्ट ऑफ़
जैमिनी हरियाणवी

जैमिनी हरियाणवी

संपादन

प्रेमकिशोर 'पटाखा'

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

वाह, वाह!

सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि जैमिनी हरियाणवी हरियाणवी शैली के ऐसे लोकप्रिय कवि हैं जिन्हें हर उम्र के श्रोता पसंद करते हैं। कवि सम्मेलनों के मंचों पर एक जमाने में आपकी तूती बोलती थी। आपकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से मंच पर सुशोभित रहती। क्या बच्चे, क्या बूढ़े और क्या जवान, सभी में आपकी पहचान और शान थी। आपके कहने का अंदाज आकर्षित करता और श्रोता देर तक ठहाकों के सागर में गोते लगाते रहते। ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स बनानेवाली कंपनी आपकी तलाश में रहतीं। ढाई दशक पहले मेरे संयोजन में आपके अनेक रिकॉर्ड्स बने और हिट हुए।



आज के दौर में टी.वी. चैनलों पर हास्य के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे हैं, भले ही वे अपनी पूरी पावर से अपनी ऊर्जा बिखेर रहे हैं, लेकिन कहीं-न-कहीं कोई ऐसी कमी जरूर है कि श्रोता इन कार्यक्रमों से ऊब रहे हैं।

एक जमाना था, जब कवि सम्मेलनों में देर रात तक कवियों को सुना जाता, श्रोताओं को एक ताजगी महसूस होती थी। आज हमें उस ताजगी की पुन: तलाश है।

उसी ताजगी के चैनल को पुस्तक रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। 'ओल्ड इज गोल्ड' परंपरा को कायम करती हास्य-व्यंग्य के धुरंधर रचनाकार जैमिनी हरियाणवी की रचनाओं से जुड़ें-पढ़ें और आनंदित होते चेहरों पर मुसकराहटों के झरने फूटने दें।

पिछले चार दशकों से भी ज्यादा श्रोताओं को अपनी मजबूत पकड़ से जकड़नेवाले फनकार की लोकप्रिय रचनाओं की सदाबहार प्रस्तुति आपको एक बार फिर अपनी पकड़ में लेकर आपको हँसाएगी-खिलखिलाएगी और गुदगुदाएगी।

आपकी एक कविता है—
अपने लिए देश
देश के लिए एकता
एकता के लिए अच्छे नागरिक
अच्छे नागरिकों के लिए अच्छा स्वास्थ्य
अच्छे स्वास्थ्य के लिए हँसना-हँसाना
और
हँसने-हँसाने के लिए 'मैं'!

तो आपके कथन, पुस्तकों के उद्देश्य एवं पाठकों के हित को ध्यान में रखते हुए आपका होना बहुत जरूरी है, वरना यह कड़ी अधूरी है।

—प्रेम किशोर 'पटाखा'

मित्र की कलम से

आज के मानसिक तनावों और व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रस्त-त्रस्त जीवन में जनसमुदाय किसी ऐसी औषधि की आशा करता है, जो उसके दिल और मन दोनों को राहत दे सके। औषधि तो अभी ऐसी कोई नहीं बन पाई है, हाँ, मनोवैज्ञानिक स्तर पर साहित्य के क्षेत्र में हास्य रस इस व्याधि के लिए रामबाण सिद्ध हो रहा है। आजकल हास्य रस की कविताएँ जनता के स्वास्थ्य को जितना संबल दे रही हैं, उतना कोई टॉनिक नहीं दे रहा, इसलिए हिंदी के हास्य कवियों की जनता को सबसे अधिक आवश्यकता है। उन कवियों में कोई ऐसा कवि, जो हँसा भी सके और मन की मस्ती में चार चाँद लगा सके, सरलता से श्रोताओं के मस्तिष्क तक पहुँचकर उन्हें गुदगुदा सके, अनुरंजित और प्रफुल्लित कर सके, तो सोने पर सुहागा है—और ऐसे कवि की चर्चा जब आती है तो एक नाम सबकी जुबान पर आता है—'जैमिनी हरियाणवी'। जैमिनीजी हरियाणवी बोली में अपनी मस्ती से और भी अधिक आनंदित क्षणों की उपस्थिति प्रस्तुत कर देते हैं। सहज-सरल बोली में गंभीर-से-गंभीर बात को रसयुक्त करके कहने की उनकी अपनी ही शैली है। जैमिनी की तरह जैमिनी ही लिख सकते हैं, कोई अन्य नहीं। 'शैली ही व्यक्ति है' कहावत उन पर पूर्णरूपेण चरितार्थ होती है।

जैमिनी कई बार हँसाते-हँसाते संवेदनशीलता के ऊँचे आयाम भी छू जाते हैं। अपनी एक गजल में जब वे कहते हैं—

''ब्याह तै गड़बड़ी हो गई
खाट अपनी खड़ी हो गई
नींद आवै नहीं रात भर
जब से बिटिया बड़ी हो गई।''

तो आँखें स्वत: नम हो जाती हैं और एक कोमल अनुभूति का स्पर्श हृदय के छोरों को छू जाता है। जैमिनी कवि सम्मेलनों के मंचों पर तो अपनी प्रसिद्धि के उच्च शिखर पर हैं ही, इधर उन्होंने गद्य के क्षेत्र में भी रचना कर अपनी प्रतिभा के बहुमुखी आयाम को स्पष्ट किया है।

एक बात और। जितना मस्त, सहज-बेलाग उनका व्यक्तित्व है, वैसा ही कृतित्व! यह विशेषता कम साहित्यकारों में ही मिलती है।

पाठक जैमिनीजी की रचनाओं को पढ़कर आनंद-विभोर होंगे, ऐसा मेरा निश्चय ही नहीं, विश्वास भी है।

—ओम् प्रकाश आदित्य

कविताएँ

कविताओं का काम

कवि सम्मेलन के बाद
एक कवि
जब घर आया
तो अपनी पत्नी पर



यूँ रोब जमाया—
''आज तो मैंने
सारा कवि सम्मेलन
लूट ही लिया
मेरी कविता ने जनता जगा दी
समझ ले कि वहाँ पर
आग-सी लगा दी...।''
पत्नी खीझकर कविजी से बोली—
''इसमें हे प्राण-पिया
नया क्या कर दिया?
हमारी शादी में भी आपने
कमाल कर दिया था
मुँह-माँगा दहेज लेकर
मेरे घरवालों को
लूट ही तो लिया था।
जाम-पर-जाम भर रहे हो
बेच-बेच मेरे आभूषण
मेरी लुटाई नहीं तो क्या कर रहे हो?
रही बात आग लगाने की
तो सच-सच बताती हूँ
मैं आपकी ही कविताओं से
रोज अँगीठी सुलगाती हूँ।''

❑

कविता बनाम भाषण

हम आपको
रात-रात भर कविताएँ सुनाते रहे,
जगाते रहे, चेताते रहे।
कविता सुनाई—
नफरत मिटाने की,
आपस में प्यार और भाईचारा बढ़ाने की।
सलाह दी—
जाति-धर्म के चक्कर में न आने की,
देश में एकता लाने की,
अच्छे नेताओं को चुनकर भिजवाने की।
लेकिन परिणाम क्या निकला कविताओं का?
आप पर तो प्रभाव दिखा नेताओं का
कविताओं के माध्यम से
समाज के लिए हमने बहुत कुछ किया,
लेकिन अफसोस
नेताओं के भाषणों ने पानी फेर दिया।
क्योंकि अपने दु:ख-तकलीफ, समस्याओं
और निजी कार्यों हेतु आप थे लाचार,
इसलिए भाषण गया जीत, कविता गई हार।
लेकिन हमें अभी भी आस है,
हमारी कलम को विश्वास है,
कि सदा ऐसे नहीं होनेवाला,
वो वक्त भी आएगा समाज में,
जब मिटेगा अंधकार, होगा उजाला।



❑

शुभ-काम-ना

पता नहीं हमने क्यों
एक भ्रष्ट नेता टाइप अधिकारी को
नववर्ष की शुभकामना दे दी
उन्होंने हाथ जोड़ गरदन झुका के ले ली
फिर अफसरी अंदाज में
रुक-रुककर कहा—
'शुभ-काम-ना'।



समाजवादी डिनर

जंगल के राजा ने
पशुओं की सभा बुलाई
उसके दिमाग में यह
राम जाने क्यों आई?
राजा बोला—'कल मैं
इसी जंगल में
बकरी और शेरों को
चीते और भेड़ों को
एक ही घाट का पानी पिलाऊँगा,
समाजवादी डिनर खिलाऊँगा।
'समाजवादी डिनर' शब्द
था सबकी जुबान पर
पशु सभी पहुँच गए
निश्चित स्थान पर,
परंतु था अचरज भारी
या थी कोई लाचारी
वहाँ न पहुँच पाईं
भेड़-बकरियाँ बेचारी,
कहाँ हैं भेड़-बकरियाँ?
सभी यह प्रश्न उठा रहे थे
शायद उन्हें मालूम नहीं था
कि डिनर में वे
उन्हीं का मांस खा रहे थे।



❑

भगवान् की शर्मिंदगी

पता नहीं कैसे और क्या-क्या
जुल्म धरा पर होते
तुम भगवान् मूड में अपने
देख रहे पर सोते,
कहाँ छिपे हो? इस मानव की
प्रभु खबर कब लोगे?
पूछ रहे हैं भक्त आपके
अब कब दर्शन दोगे?
उत्तर में भगवान् यूँ बोले—
''सच-सच बात बताऊँ
सृष्टि रचकर शर्म आ रही
कैसे मुँह दिखलाऊँ?''

❑

न लेना, न देना

मैंने घरवाली से कहा—
''दीवाली आ रही, भाग्यवान
मेरी बात सुनिए देकर ध्यान
क्षेत्र के नेताजी
शुभकामनाओं के पोस्टर छपवाएँगे
हमारी कॉलोनी में भी आएँगे
दीवाली की शुभकामना देकर
रस्मी तौर पर दी गई वोटरों की शुभकामनाएँ भी
अपने साथ ले जाएँगे।
वो हमें टेलीफोन पर भी दे सकते हैं शुभकामना
तो उस समय कृपा करके अपने को थामना
न उनकी शुभकामना लेना
न अपनी शुभकामना उन्हें देना
क्योंकि हमारी शुभकामना ही
उन्हें पद और पैसा दिलाती है
उनकी जायदाद बढ़ाती है
उनके द्‌वारा दी गई शुभकामना तो
बस हमें उल्लू बनाती है
और लक्ष्मी हम पे सवार हो के
उनके घर चली जाती है।''

❑

अपनी इस्त्री दे दो

एक दिन
एक पड़ोस का लड़का
मुझसे आकर बोला—
''चाचाजी, अपनी इस्त्री दे दो।''
मैं चुप रह गया
वह पुन: कहने लगा—
''चाचाजी, अपनी इस्त्री दे दो।''
उसने जब कहा दोबारा
मैंने अपनी घरवाली की तरफ किया इशारा
और कहा—''ले जा बेटे, यह बैठी।''
वह लड़का कुछ मुसकाया, कुछ शरमाया
फिर बोला—''जी, वह कपड़ोंवाली।''
मैं बोला—''रे बेवकूफ, तुझे दिखता नहीं,
यह कपड़ों में ही तो बैठी है।''
सुनते ही वह लड़का बोला—
''चाचाजी, तुम तो मजाक करो हो
मुझे तो वह करंटवाली चाहिए।''
मैंने उसे बताया—''बावली औलाद,
तू हाथ तो लगाकर देख
यह करंट भी मारती है।''

❑

ओ मेरी महबूबा

ओ मेरी महबूबा
तुम्हारे नापाक इरादों
जमाखोर वायदों
बेईमान निगाहों और तस्करी अदाओं ने
मेरा बजट बिगाड़ दिया
मेरा घर उजाड़ दिया।
खूबसूरती का ठेका लेकर
हजारों दिलों का
कर लिया गबन,
प्यार का पुल
कमजोर बुनियाद पर खड़ा करके
हँस रही हो जानेमन!
दुकान के आगे
बढ़ाए गए शोकेस-सा
अपना घूँघट हटा लो,
अवैध कब्जा जमाने की प्रवृत्ति-सी
अपनी अँगड़ाई सँभालो।
भाव तुम बढ़ाती रही
एक गरीब इनसान से,
बैठा है लुटा हुआ
तेरी मिलावटी मुसकान से
अपने उपभोक्ता को
मरने से बचा ले,
आज तो होंठों पर
रेट-लिस्ट लगा ले!



❑

गली का फील्डर

क्रिकेट के खिलाड़ी ने
अच्छा 'क्षेत्ररक्षक' होने का
जब रोब जमाया
तो उसकी पत्नी ने
चिढ़ाते हुए फरमाया—
''बस-बस, देख ली तुम्हारी फील्डिंग
'गली' में खड़े रहते हो मुँह लटकाए
और जब गेंद—
तुम्हारे इधर-उधर से निकल जाती है
तो मुझे—
हमारे विवाह से पहले की घटना याद आती है।
तुम खड़े हुए थे
हमारी गली में भोंदू-से,
और मुसकराती हुई मैं
तुम्हारे पास से गुजर गई थी।
मेरे चले जाने के बाद
तुम सोकर जागे थे
और 'बाउंड्री' पार होने तक
मेरे पीछे भागे थे
आती हुई तेज गेंद को
क्या पकड़ेंगे तुम्हारे हाथ?
यह परसों की ही तो है बात
जब मैंने फेंककर
मारा था बेलन
तो सीधा जाकर
तुम्हारी नाक पर लगा था,
उस वक्त बताओ
तुमने 'कैच' क्यों नहीं लिया था?''



बीवी बनाम टी.वी.

हम सत्य कह रहे हैं जी
कि मौजूद है हमारे घर में
एक अदद बीवी और एक अदद टी.वी.

परंतु इस दुनिया में
कुछ ऐसे लोग भी हैं
जिनके पास जितने कमरे, उतने ही ये
पर हमें उनसे क्या?
ये लोग बेशक अपनी उपलब्धियों पर तने रहें
हमारे तो बस एक बीवी और एक टी.वी. बने रहें।

रुला गया हमको हमारी किस्मत का लेखा
क्योंकि हमारी बीवी और हमारे टी.वी. को
हमसे पहले हमारे पड़ोसियों ने देखा।

जिस दिन हमारी बीवी आई
हमें तो मिली बधाई
और बीवी को मिली 'मुँहदिखाई'।
लेकिन जब हमारा टी.वी. आया
बधाई तो मिली
लेकिन 'मुँहदिखाई' कोई भी नहीं लाया।
इस पर हम बहुत हुए दु:खी
लेकिन एक रही तसल्ली
कि टी.वी. के निर्माता ने
हमें पाँच साल का 'गारंटी-कार्ड' दिया
बीवी के निर्माताओं को भी
ऐसा ही चाहिए था करना
और पाँच साल का गारंटी-कार्ड हमारे हाथ पे धरना
कि अगर यह ठीक नहीं चले
तो वापस कर जाइयो
दूसरा पीस ले जाइयो!
आजकल तो टी.वी. वाले नई-नई सुविधाएँ दिए जा रहे हैं—
'पुराना लाओ, नया ले जाओ'
और इस तरह हमारा जी जला रहे हैं
बीवी ने और टी.वी. ने

हमारे घर की शोभा बढ़ाई
तो हमने भी अपने कमरे में
उन्हें टिकाने के लिए खास-खास जगह बनाई।
हमने सोचा कि बहलेगा हमारा मन,
लेकिन दोनों में आरंभ हो गया 'कंपीटीशन'
एक निकट-दर्शन तो दूसरा दूरदर्शन
एक कहे—'मुझे देख', दूसरा कहे—'मुझे देख'
बीवी चुप तो टी.वी. चालू
टी.वी. बंद तो बीवी शुरू
मजबूरी में हमको
दोनों के सामने बैठना पड़ा, देखना पड़ा
सुनना पड़ा, सहना पड़ा।

शुरू-शुरू में
हमारी बीवी थी रंगीन, टी.वी. था 'ब्लैक एंड व्हाइट'।
लेकिन अब जब टी.वी. आ गया है रंगीन
तो हमारी बीवी हो गई है 'ब्लैक एंड व्हाइट'।
आरंभ में दोनों ने
कार्यक्रम दिए बहुत अच्छे
खुश हम, खुश पड़ोस के बच्चे
लेकिन धीरे-धीरे हमारी परेशानियाँ बढ़ने लगीं जनाब,
एक दिन बीवी बीमार, दूसरे दिन टी.वी. खराब।
जब हम होने लगे बोर
तो एक पड़ोसी आकर बोला—'अपना टी.वी. ले आओ और।'
हमें उस पर आया बहुत गुस्सा
क्योंकि वह ऐसा ही सुझाव
हमारी बीवी के लिए भी तो दे सकता था।

एक दिन आया भयंकर तूफान
हमारे घर के पासवाला पेड़ गिर पड़ा श्रीमान।
टी.वी. का 'एंटीना' टूट गया
बीवी का माथा फूट गया
दोनों की तसवीर बिगड़ गई
हमें दोनों के लिए अलग-अलग डॉक्टर बुलाने पड़े।
जब देनी पड़ी बहुत सारी फीस
तो कलेजे में लगी टीस

हम अपने दोनों हाथ उठाकर बोले—'हे जगदीश
हमारी सहायता को आओ
इन दोनों के खर्चे से बचाओ!'

हमारी तो जैसे-तैसे
कट गई ये जिंदगी,
क्योंकि हमारी बीवी के आने के पंद्रह साल बाद
आया था हमारा टी.वी.।
इन कुँआरे नौजवानों का क्या होगा
क्योंकि इनकी बीवी तो
अपने साथ में लाएँगी टी.वी.
इन बेचारों के सामने
एक समस्या खड़ी हो जाएगी
कि सुहागरात को
ये बीवी देखेंगे या टी.वी.?



❑

ब्लैक-आउट

रामकली कहने लगी—
''ओ रे रामकला,
मैं जागूँ, तू सोवे है
ब्लैक-आउट जो रोज करें,
यह क्या होवे है?''
रामकला बोला—
''ब्लैक-आउट करने की चर्चा
होने लग रही गली-गली
पर इसके बारे में मुझको भी
पता नहीं है रामकली,
अब तुम भी आकर सो जाओ
हो रहा है घुप्प अँधेरा,
ब्लैक-आउट कभी दिन में करेंगे
तभी पटेगा बेरा।''

❑

हिंदी में खेती-बाड़ी

गाँव में रहनेवाले
एक भाषा अध्यापक
विद्यालय में पढ़ाते हैं हिंदी,
और खेत में उगाते हैं
घीया, तोरी, भिंडी।

खेती-बाड़ी के शौक ने उनको
इस कदर प्रभावित किया
कि एक दिन—
एक शिष्य की कॉपी पर
उन्होंने लिख ही दिया—
''प्रयोग करके
अपनी भलाई करो
और कठिन शब्दों की
पाँच-पाँच बार नलाई करो।''

❑

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर

एक अध्यापक की हुई शादी
सुहागरात को
दुलहन का घूँघट उठाते ही
अपनी आदत के अनुसार
उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी—
''तेरा नाम—चंपा है या चमेली?
कौन-कौन सी थी तेरी सहेली?
सहेलियों की और अपनी
सही-सही उम्र बता!
तन्नै मैनर्स आवैं सैं के नहीं
पलंग पै सीधी खड़ी हो जा!
तेरे कितने भाई-बहन हैं?
कितने छोटे हैं? कितने बड़े हैं?
कौन-कौन अपने पाँवों पर खड़े हैं?
जन्म से विवाह तक
देखी हुई फिल्मों के नाम गिना
कौन सी फिल्म किसके साथ देखी, जोड़े बना?
अपने मकान का भूगोल हमें समझा
संक्षेप में परिवार का इतिहास भी बता।''
सुनकर ये ढेर सारे सवाल
बेचारी दुलहन का हो गया बुरा हाल
तभी उसका हौसला बढ़ाते हुए
उसकी पीठ थपथपाते हुए
अध्यापक बोला—
''घबरा मत,
हिम्मत से काम ले
'किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दे!' ''



❑

रहस्य

शिक्षक ने शिष्यों को पढ़ाया
फिर अपने
विद्यार्थी-जीवन के बारे में बताया—
''मैं बहुत अच्छा विद्यार्थी था
टीचर जो कुछ पढ़ाता
मैं तुरंत समझ जाता
रोना आता है आज तो देखकर
कितना गिर गया है पढ़ाई का स्तर?''

एक शिष्य खड़ा होकर बोला
और यूँ रहस्य खोला—
''सर, आप उस समय
किस्मतवाले बच्चे थे
क्योंकि आपके टीचर सचमुच
हमारे टीचर से अच्छे थे!''

❑

नया जमाना : नई परिभाषाएँ

आज का इनसान :
भीतर से कटपीस, ऊपर से थान।
आज की नारी :
विवाह से पूर्व तलाक की तैयारी।
आज का पहलवान :
फिल्मी-स्टूडियो में मूँछों को तान।
आज का नेता :
जनता में डबल रोल करनेवाला अभिनेता।
आज का संत :
हाथ में बंदूक, भाई से भिड़ंत।
आज का वकील :
सत्य के कबूतर पे झपटती हुई चील।
आज का दफ्तर :
फाइलों को गोदामों में पालता है अफसर।
आज का अफसर :
सीट पर कभी-कभी, मीटिंग में अकसर।
आज का क्लर्क :
ओवर टाइम में काम करने का दे रहा है तर्क।
आज का टीचर :
काँपते हुए निडरता पे लैक्चर।
आज का स्टूडेंट :
कॉपी ब्लैंक, अंक सेंट-परसेंट।
आज का यार :
मन का चोर, तन का थानेदार।



❑

कूट-नीति

राजनीति में आपका आना यदि मजबूरी है
तो कूटनीति को समझना और अपनाना बहुत जरूरी है
लोगों से सहयोग, समर्थन और वोट प्राप्त करने हेतु
मेरे प्यारे, समाज की भलाई का विचार मत करिए
आपके पास अगर है तो अपनी अंतरात्मा पर ध्यान मत धरिए
बस जनता के दिमाग में जाति-धर्म के नाम पर
नफरत और दुश्मनी की भावनाएँ कूट-कूटकर भरिए
भाई मेरे, शराफत, सच्चाई और भाईचारे को कूड़े में डालिए
दो-चार लफंगे और गुंडे पालिए
सफलता के वास्ते, हे नए नेताजी
कूटनीति को अच्छी तरह समझ जाइए
इसे तन, मन और धन से अपनाइए
दो-चार जगह अपने विरोधियों को
खुद कूटकर दिखाइए
या अपने गुंडों से कुटवाइए
भैया, कूटनीति को सदा के लिए बसा लेना अपने मन में
और चुनाव जीतने के बाद
इसे चालू रखना विधानसभा या संसद भवन में
अच्छी तरह समझ लो अभी
'कूटनीति' अर्थात् कूटने की नीति।

❑

चाह विवाह की

भैया भोला राम कुँआरे
पहुँचे हनु-मंदिर के द्वारे
हाथ जोड़कर बोले—''हे बजरंग बली
मेरा कष्ट मिटा दे,
बहुत दिनों से भटक रहा हूँ
अब तो मेरा विवाह करा दे!''
विनती सुनकर उस कुँआरे की
बोले तब हनुमान—
''कान खोलकर सुन ले मेरी
ओ मूर्ख इनसान,
दो पेड़े प्रसाद चढ़ाकर
इस जीवन का स्वाद चाहिए,
दस दिन की सेवा के बदले
विवाह का आशीर्वाद चाहिए।
क्या तुझको मालूम नहीं है
मैं हूँ श्रीराम का प्यारा
गदा उठाकर रण में कूदा
जब भी उनका हुआ इशारा।
सीता माँ को खोज निकाला
लंका में जा आग लगा दी,
हिम-गिरि की चोटी पर चढ़कर
लक्ष्मण के लिए बूटी ला दी।
सेवा में यह उम्र बिता दी,
फिर भी नहीं हुई है शादी।
भोले भक्त बताओ तुम को
कैसे मैं समझाऊँ?
मेरा विवाह तो हो जाने दे
फिर तेरा करवाऊँ!''



गुलाबो की घाघरी

गाँव की गुलाबो, गली में खड़ी है
कुदरत ने फुरसत में बैठ के गढ़ी है
जब वो बन-सँवर के चलती है
आसमान झुकता है, धरती हिलती है
नंगे पाँव हों तो पैरों के ऐसे निशान
कौन उन्हें समझे, कौन करे पहचान?
तुम सोचोगे कि किसी आदमी के हैं या ऊँट के?
ऊँट के भी हैं या झूठ-मूठ के?
नाक है दबा हुआ, कान बड़े-बड़े हैं
नाक के नीचे कुछ बाल भी खड़े हैं
चमकते हुए गुलाबो के ऐसे नयन हैं
जैसे नायलोन के दो छोटे बटन हैं।

जुल्फ भी उसकी इस तरह बल खाती है
जैसे कोई मर्खनी भैंस चली आती है
गाँव के लोग तंग ऐसी लुगाई से
सबको पसीना छूटे उसकी गरमाई से
पास अगर बैठे तो चूल्हे का भरम हो जा
चाँद पर चली जा तो वो भी गरम हो जा।
पहन रखी घाघरी पूरे बावन गज की
सोच रही मन में, आज खूब सजगी।

वर्षों से धोई नहीं, पहने है, उतारे है
जहाँ वो टँगी है, बदबू ही मारे है
मेरी इस बात पर हँसो मत मेरे यार
घाघरी जो बेच दे तो रुपए मिलें कई हजार
अस्पतालों के डॉक्टर फौरन खरीद कर लेंगे
ऑपरेशन के कमरे में सँभाल के धर लेंगे
बेहोश करने की दवा को कूड़े में दबा देंगे
ऑपरेशन से पहले यह घाघरी सुँघा देंगे।



देश की कुंडली

चढ़ते हुए देश में, नोट महक रहा है
महकते हुए नोट में, वोट लटक रहा है
लटकते हुए वोट में, नेता घूम रहा है
घूमते हुए नेता में, अभिनेता झूम रहा है
झूमते हुए अभिनेता में, कला उछल रही है
उछलती हुई कला में, बला मचल रही है
मचलती हुई बला में, बाजार चल रहा है
चलते हुए बाजार में, भ्रष्टाचार पल रहा है
पलते हुए भ्रष्टाचार में, अफसर फँस रहा है
फँसते हुए अफसर में, दफ्तर धँस रहा है
धँसते हुए दफ्तर में, क्लेश बढ़ रहा है
बढ़ते हुए क्लेश में, देश चढ़ रहा है!



❑

मंत्री की विदेश-यात्रा

हवाई जहाज पर चढ़ते हुए
एक मंत्री महोदय से
मैंने पूछा—
''आप विदेश-यात्रा पर जा रहे हैं
क्या वहाँ से समाजवाद ला रहे हैं?''
प्रश्न मेरा सुनकर
मंत्री ने दिया उत्तर—
''आप लोग भी खूब करते हो कमाल
बस समाजवाद के बारे में
पूछते हो सवाल
हर समय इसी का ही
करते-करते खयाल
यह देखिए
उड़ गए हैं मेरे सिर के बाल
तो बरखुरदार
मत सोचो बेकार
कि मैं—
विदेश से समाजवाद लाऊँगा
मैं तो सिर्फ अपने सिर पर
बाल उगाने के लिए
बढ़िया-सी खाद लाऊँगा।''



❑

पद-यात्रा

एक बुजुर्ग नेता
एक युवा नेता से बोले—
''छोड़कर दुनियादारी
करो पद-यात्रा की तैयारी
चरण मेरे, यात्रा तुम्हारी।''
सुनते ही युवा नेता
उछलकर बोला—
''देख चुके हैं तुम्हारे चरणों पर चलकर
अब तो समय को बदलना होगा।''
बुजुर्ग नेता हँसे—
''तुम्हारे पाँव
जो कभी धरती पर टिके ही नहीं
सदा आसमान में रहे
तुम्हारे पाँव के निशान तो धरती पर
आज तक नहीं मिले।''
युवा नेता ने तुक में तुक मिलाई—
''और आपके पाँव
कुरसी पर बैठते ही भारी हो गए, बिलकुल नहीं हिले
खैर, छोड़ो पुरानी बातों को
साथ चलता हूँ मगर कुरसी के लिए वचन भरो।''
बुजुर्ग नेता ने युवा नेता के सिर पर हाथ फिराया
और उसे बच्चों की तरह समझाया—
''अरे बावले
कुरसी की राजनीति समझ ले जरा
पद-यात्रा का मतलब है
पद के लिए यात्रा!''



❑

ट्रक-ड्राइवर

चुनाव में खड़ा हो गया
एक ट्रक-ड्राइवर
तो अन्य प्रत्याशी
खाने लगे चक्कर
क्योंकि वोटरों को उनमें
एक कमी नजर आई
कि जिन्होंने आज तक साइकिल भी नहीं चलाई
वे देश किस तरह चलाएँगे?
ट्रक-ड्राइवर का सबने स्वागत किया
और उसने भाषण भी जोरदार दिया—
''भाइयो! इस देश को मैं चलाऊँगा
और बिना ब्रेक लगाए, पूरी स्पीड से ले जाऊँगा
ये पुराने नेतागण
छत्तीस साल से मस्ती में झूम रहे हैं
और अपने देश को
एक रिक्शा में बैठाए घूम रहे हैं।
मुझे अवसर दो
मैं इस देश की सारी समस्याएँ
अपने ट्रक में लादकर ले जाऊँगा
आप लोग कहोगे—'लद्दी जा, लद्दी जा'
फिर दुनिया को, अपने हाथ दिखाऊँगा
सभी समस्याओं को, पड़ोसी देशों में फेंक आऊँगा।
ये छोटे-छोटे पड़ोसी देश तो
साइकिल, स्कूटर और कार की तरह हैं
कुचलता हुआ चला जाऊँगा
अगर जरूरत पड़ी
तो चीन की दीवार से जा टकराऊँगा।''
ट्रक-ड्राइवर का सुनकर भाषण
वोटरों ने लगा दिया अपना तन-मन-धन
और वह जीत गया इलेक्शन
जीतने के बाद उसकी लगन और योजनाएँ देखकर
उसे बना दिया गया मिनिस्टर
जब वह अपने मंत्रालय में गया पहली बार
तो अपनी पत्नी की मैली-कुचैली, चोटियाँ ले गया चार

कुरसी की चारों टाँगों पर बाँध लिख डाला—
'बुरी नजरवाले तेरा मुँह काला'।
एक दिन
एक अंग्रेजी भाषा का पत्रकार
करने आ गया उसका साक्षात्कार,
पत्रकार ने अंग्रेजी में अपनी बीन बजाई
जब नहीं समझ में आई
तो मंत्रीजी ने उसे
अंग्रेजी में ही डाँट पिलाई—
''ओके, टाटा, बाई-बाई, होरन प्लीज।''
पत्रकार ने अपना माथा पीटा
और कहने लगा 'ऑल राइट'
मंत्रीजी ने उसे बुलाकर
उसके कान में कहा—
''यूज डिपर एट नाइट।''

❑

वंस मोर

मंच पर एक गीतकार
श्रोताओं के आग्रह पर
एक ही गीत को
सुना रहा था बार-बार



उस गीत को
तीन बार पढ़ने के बाद
गीतकार श्रोताओं से
करने लगा फरियाद—
''अब इसे रहने भी दीजिए
कोई और गीत सुन लीजिए।''
श्रोताओं में से एक आवाज आई—
''हे गीतकार भाई
जब तक इस गीत को
अच्छी तरह नहीं पढ़ोगे और शब्दों का उच्चारण
सही-सही नहीं करोगे
तब तक
हम चाहे होते रहें बोर
पर कहते रहेंगे—
'वंस मोर, वंस मोर'।''

❑

सैनिकों में कवि सम्मेलन

सीमा पर तैनात
एक सैनिक-कमांडर में
साहित्यिक जोश ने लिया उछाला
और एक कवि सम्मेलन करा डाला

एक टैंक को मंच बनाया गया
और कवियों को हेलिकॉप्टर से
पैराशूट द्वारा मंच पर उतारा गया

स्वागत की रस्म कमांडर ने निभा दी
और खाली कारतूसों की पेटियाँ
मालाओं के रूप में
कवियों को पहना दीं

आरंभ में
एक वीर रस के कवि ने
कविता पाठ किया
उसने कहा—'जवानो उठो...'
कमांडर ने कवि को टोका—
'उठने का आदेश मैं दूँगा
आप तो पढ़िए अपनी कविता।'
इतना सुनते ही कवि का शरीर काँपा
और भूल गए कविता
दूसरी शुरू की
परंतु तालियों के अभाव में
मन से न पढ़ सके
और जल्दी ही समाप्त करके बैठ गए

सैनिक कमांडर माइक पर आकर बोला—
'जवानो, ये थे वीर रस के शायर
कविता समाप्त हुई
आप हवा में करिए तीन-तीन फायर।'

एक गीतकार ने
श्रृंगार रस का एक गीत गाया
जो सैनिकों को बहुत भाया

परंतु गीत समाप्त होने तक वे
कमांडर के आदेश का इंतजार करते रहे
कमांडर ने आदेश दिया—

'जवानो, यह एक शृंगार रस का था गीत
जिसका तुम सब पर
हुआ है बहुत असर
इसलिए अपने-अपने टैंट में जाकर
सोने से पहले, याद रखोगे
एक-एक पत्र अपनी-अपनी बीवियों को लिखोगे।'

अब आया एक हास्य रस का कवि
उसने जोर लगाकर अपनी हास्य कविता पढ़ी
न कोई हँसा, न कोई मुसकराया
कवि ने अपना दर्द कमांडर को बताया
तो कमांडर बोला—
'कविजी, ये जवान
आपकी रचना के चक्कर में नहीं फँसेंगे
इन्हें जब मैं आदेश दूँगा, तभी हँसेंगे।'

कविता समाप्त होने पर
कमांडर ने हँसने का दिया आदेश
तो अनुशासित जवानों का
आरंभ हुआ हँसने का क्रम
और वे तब तक हँसते रहे
जब तक उन्हें नहीं कहा गया 'थम'!



❑

दाढ़ का दर्द

कविवर निर्बल दास 'मर्द'
जिसकी दाढ़ में था सख्त दर्द
स्वतंत्रता दिवस की धुन में
चला गया कवि सम्मेलन में
संचालक ने जब उसको माइक पर बुलाया
तो उसने दुखती हुई दाढ़ को
अपने बाएँ हाथ से दबाया



दायाँ हाथ आसमान की तरफ उठाया
और यूँ सुनाया—
''हमारी सारी समस्याओं का हल हो सकता है
देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है
गरीबी मिट सकती है
बेकारी हट सकती है
लेकिन ये रोज-रोज के चुनाव
नैतिकता का अभाव
ऊपर से ये गहरा घाव (दाढ़ की तरफ इशारा करके)
क्या करें बेचारे नरसिंह राव?
मैं तो उन्हें तब ही मानूँगा
मेरी इस दाढ़ का दर्द ठीक कर दें तो जानूँगा।''

❑

कवि सम्मेलन का भविष्य

भविष्य में होनेवाले कवि सम्मेलन
बड़े ही विकट होंगे,
पारिश्रमिक तो श्रोतागण लेंगे,
कवियों के हाथों में टिकट होंगे।

श्रोतागण किसी भी कवि को
नहीं कर सकेंगे हूट,
कवि को कुछ भी
कहने-करने की होगी छूट।

जो भी कवि-कवयित्री
मंच पर आएँगे,
अपनी-अपनी रचनाओं को
जबरदस्ती सुनाएँगे,
और अपनी सहायता के लिए वे
दो-दो पहलवान लाएँगे।

श्रोताओं को तालियाँ बजानी ही पड़ेंगी
वरना
वीर रस का कवि उनके हाथ मरोड़ देगा
श्रोताओं को रोना पड़ेगा,
वरना
करुण रस का कवि उनकी आँखें फोड़ देगा।
श्रोताओं को हँसना पड़ेगा,
वरना
हास्य रस का कवि उनकी बत्तीसी तोड़ देगा।
अगर हुई कोई कवयित्री
तो हालत होगी अजीब,
श्रोताओं ने वाह-वाह नहीं कही
तो खिंचवा देगी जीभ
और
आयोजक महाराज
नहीं करेंगे एतराज
क्योंकि उसको तो कवि सम्मेलन चलाना है
कवि-कवयित्रियों के माध्यम से धन कमाना है

पारिश्रमिक श्रोताओं को दिलवाना है।

चिंताग्रस्त खड़े होंगे साहित्य-कला के घोड़े
ज्यादा होंगे कवि-कवयित्री, श्रोता होंगे थोड़े
श्रोतागण होंगे नौ
तो कविगण होंगे सौ,
इसका फिर निकलेगा, कुछ ऐसा परिणाम
पोस्टर में आएँगे बस श्रोताओं के नाम।

❑

नई बीमारियाँ : नए इलाज

— मलेरिया घट रहा है
मल-एरिया बढ़ रहा है
झाड़ू मारिए!
— पक्षाघात घट रहा है
पक्षपात बढ़ रहा है
देखते रहिए!
— बेरी-बेरी कम है
हेरा-फेरी ज्यादा है
सब्र के इंजेक्शन लगवाइए!
— चेचक मिटी है
चकचक बढ़ी है
मौन व्रत का काढ़ा पीजिए!
— रिकिट-रोग घट रहा है
रिश्वत-रोग बढ़ रहा है
मंत्री से रिश्तेदारी ढूँढिए!
— टी.बी. का रोग घट रहा है
टी.वी. का रोग बढ़ रहा है
बच्चे बचाइए!
— डाइसेंट्री जा रही है
क्रिकेट कमेंट्री आ रही है
आवश्यक कार्य छोड़कर सुनिए!
— तिल्ली घट रही है
दिल्ली बढ़ रही है
ईंटों का भट्ठा लगाइए!
— बलगम घट रहा है
पत्र-बम फट रहा है
प्रेम-पत्र ध्यान से खोलिए!
— दिमाग बंद है
दिल दौरे पर है
नेता और प्रेमिका को दे डालिए!
— राशन कम है
भाषण ज्यादा है
पेट पकड़कर कानों से खाइए!
— ईमानदारी की मंडी ठंडी है

बेईमानी का बाजार गरम है
अवसर का लाभ उठाइए!
— शराफत मौन है
गुंडागर्दी का बोलबाला है
गुंडे पालिए!

❑

सुरक्षा की हद

जेबकतरों का सताया हुआ आदमी
बस में चढ़ा
चढ़ते ही बस-कंडक्टर से कहा—
''भैया मेरे, चार टिकटें दे दो
मेरे कोट की चार जेब हैं
मैं एक-एक टिकट को
अलग-अलग जेब में रखूँगा
क्या पता कौन सी कट जाए?
एक कटेगी, दूसरी कटेगी
अगले दरवाजे तक पहुँचने में
तीसरी कटेगी, चौथी तो बचेगी।''
बस कंडक्टर मुसकराया—''चौथी भी कट गई तो?''
आदमी को बहुत गुस्सा आया—
''मेरी पेंट की जो भीतरवाली जेब है,
उसमें जो पर्स रखा है,
वह आपका है
और उस पर्स में जो ऑल-रूट पास है,
आपके बाप का है?''

❑

किराए का मकान

कहने लगी एक दिन सजनी—'सुन साजन धर ध्यान
इतने दिन दिल्ली में हो गए, अपना नहीं मकान।'
मैं बोला—'सुन भाग्यवान, मैं आज तुझे समझाऊँ
अब तक कोठी नहीं बनाई, इसका भेद बताऊँ,
अगर मकान किराए का तो कहीं छलाँग लगाओ
कील कहीं भी गाड़ो, कपड़े, तसवीरें लटकाओ,
सहन, बरांडा, कमरा, चाहे ईंटें कहीं भी फोड़ो
असर न अपने दिल पर होता, कहीं कोयले तोड़ो,
ईंट अगर दीवार की निकले, हमें न इसका डर है
इसकी चिंता वही करेगा, जिस साले का घर है,
ईंटें टूटें, मालिक सोचे, उसका हाथ मरोड़ा
कोयले तोड़ें हम, उसकी छाती पर बजे हथौड़ा,
उसका खून जलेगा, वही मरम्मत करवाएगा
हमसे तो बस किराया लेने पहली को आएगा,
सुनो डियर, जो घर अपना तो वहीं पे रहना होगा
वही नजारे, वही पड़ोसी, सबकुछ सहना होगा,
गली वही, वो ही दीवारें, ऊब जाएगा जीवन
एक बार जो लड़े, उम्र भर का हो जाए दुश्मन,
बढ़िया कटे जिंदगी, नुस्खा बतलाऊँ, बिन दाम
घर बदलो, ज्यों दल बदले हैं आया औ' गया राम,
अपना नेक व्यवहार बता के, बनो किराएदार
पहले कुछ दिन रहो प्यार से, फिर कर लो तकरार,
जब हो झगड़ा तो मालिक भी हो जाए नाराज
तुम भी उसकी पत्नी से झगड़ो, मत करो लिहाज,
बोल-चाल हो बंद प्रिये, झगड़े का यही कमाल
हम भी उन्हें किराया देना बंद करें तत्काल,
झगड़े में मालिक मकान को नाकों चने चबाओ
बिना किराए रहने का पूरा आनंद उठाओ!'



❑

ओलम-लपक

एक विद्यालय में नेताजी
अपने सामान्य ज्ञान की पोल
खुद खोल रहे थे
'ओलंपिक' पर बोल रहे थे—
'प्यारे बच्चो, ओलम-लपक
यह एक खेल है
जो हमने और हमारे बाप-दादा ने कभी नहीं खेला
शायद यह खेल
यूरोपवालों ने अपने लाभ के लिए चलाया
इसलिए हमने
अपने बच्चों को भी नहीं खिलाया
हम तो अपनी जवानी में
सिर्फ तीन मैच खेला करते थे—
कबड्डी, टूर्नामेंट या फिर सेमीफाइनल
अब तो नए-नए मैच चल पड़े
'ओलम-लपक',
हमने भी एक नया मैच चलाया था—
'एशियाड'
यूरोपवालों से हमने पूछा था—
'अगर तुम अच्छे खिलाड़ी हो
ताकत है, हिम्मत है
तो 'एशियाड' खेलने क्यों नहीं आए?'

❑

तीन की बीन

पढ़ के देख लिया अंकों में बड़ी तीन की महिमा
तीन लोक और तीन स्वामी—महेश, विष्णु, ब्रह्मा
मनुष्य की सारी आयु भी तीन में बाँटी जाए
भोला बचपन, भरी जवानी, बुरा बुढ़ापा आए
भूत, भविष्य औ' वर्तमान, ये तीन बनाए काल
काम, क्रोध और लोभ से यह जीव बना चांडाल
सत, रज, तम, भाई मेरे ये तीन तरह के गुण हैं
तीन तरह की चलती शीतल, मंद, सुगंध पवन हैं
बाद मृत्यु के स्वर्ग, नरक, बैकुंठ से नहीं बचा जा
काव्य, कहानी, नाटक से सारा साहित्य रचा जा
तैंतीस करोड़ देवताओं में तीन की शान भरी थी
वामन ने तो तीन डगों में धरती माप धरी थी
गंगा, यमुना, सरस्वती, प्रयाग में है संगम
उत्तमता के मापदंड हैं सत्यं, शिवं, सुंदरम्
सृष्टि-रचयिता ने मनुष्य की जाति तीन बनाई
पुरुष, स्त्री और तीसरी स्वयं सोच लो भाई
अशुभ मुहूर्त भी माना जाए हो जब तीन का नाम
शिव की तीजी आँख खुली तो भस्म हुआ था काम
तीन रानियाँ थीं भाइयों राजा दशरथ के पास
राम, लक्ष्मण, जानकी, तीन गए वनवास
कैकेयी ने राजा दशरथ से वचन तीन भरवाए
वचन तीसरा सुन दशरथ ने तीन ही चक्कर खाए
शादी में जब पंडित आकर फेरे करवाता है
तीन वचन ही पति-पत्नी दोनों से भरवाता है
कहो एक, दो, तीन एकदम दौड़ शुरू हो जाए
बाद तीन के बस कह दो तो बच्चा न हो पाए
यदि 'परिवार-नियोजन' की तुम पूछो हो पहचान
अस्पताल में जाकर ढूँढ़ो लाल त्रिकोण निशान
बात बड़ी भारी पड़ जाए कहो जो तीजी बार
तीन बार के हारे पीछे पक्की हो जा हार
दुनिया के देशों ने तीन तरह की फौज बनाई
नाम नोट करने हों कर लो—जल, थल और हवाई
तीनों सेनाओं ने मिलकर लाइन तीन बनाई
'तीनों-तीन' बढ़े और चलकर बढ़िया परेड दिखाई

देश का यह तिरंगा झंडा लहर-लहर लहराया
अशोक-चक्र में देखो तो 'तिन-मुँहा' शेर बिठाया
शिवजी का त्रिशूल देखकर आए याद जरूर
दिल्ली में जो 'तीन मूर्ति' हो गई है मशहूर
इस जीवन की भाग-दौड़ में तीन खेलता खेल
ब्रॉड, मीटर, नैरोगेज, है तीन तरह की रेल
सभी रेल के डिब्बों में भी श्रेणी तीन बनाई
कवि 'जैमिनी' की एम.ए. में थर्ड डिवीजन आई
आज परीक्षा होय, तिमाही, छैमाही, नौमाही
इन सब में भी अंक तीन की हमने महिमा पाई
परचे सभी तीन घंटों के, बात हो गई खास
तैंतीस प्रतिशत अंक मिलेंगे तब होगे तुम पास
त्रिभाषा फॉर्मूले से मिटे भाषा तकरार
ट्रिगनोमैट्री का भी त्रिभुज है आधार
इस दुनिया में झगड़े की जड़ सिर्फ बताई तीन
तुम सबको मालूम है—जर, जोरू और जमीन
मेरे-तेरे जीवन में बस रंग तीन का छाया
सुरा, सुंदरी, स्वर्ण ने भई हमको नाच नचाया
उत्तम, मध्यम औ' निकृष्ट के चलो देखते सीन
कभी-कभी तो मिले आदमी, बजे शक्ल पे तीन
बड़ी ऋतुएँ हैं गरमी, वर्षा, सर्दी जमकर आए
कभी आदमी सर्दी में बस बना 'तीन का' पाए।



❑

महिला सम्मेलन

मोहल्ले की महिलाओं ने
सम्मेलन करवाया
जिसके उद्घाटन के लिए
एक महिला मंत्री को बुलाया।
मंत्री महोदया देने लगी भाषण—



''हम क्लर्क हों या कलाकार
वैज्ञानिक हों या साहित्यकार
हाउस-वाइफ हों या हवलदार
हमें प्राप्त नहीं हो सकते
हमारे सामाजिक अधिकार
जब तक ठीक नहीं होंगे
हमारे आचार-विचार।''
मंत्री महोदया को बीच में ही टोककर
बोली एक वृद्धा—
''हमारा तो 'अचार-विचार'
बिलकुल है ठीक
हाँ, हो सकता है तुम्हारा ही हो खराब!
इसलिए बेटी
तुम जल्दी घर जाओ
और अपने अचार को धूप लगाओ!''

❑

मच्छर और नेता

खून से ही आदमी
पैदा होता है, जीता है, मरता है
कभी-कभार तो एक-दूसरे के खून का प्यासा
इधर-उधर फिरता है
लेकिन कहीं मच्छर न उसका खून पी जाए
अपनी सुरक्षा का पूरा इंतजाम करता है
मतलब ये कि मच्छर के काटने से बहुत डरता है
प्रयोग में लाता है
नाइट-किंग, नाइट-क्वीन या ओडोमास
पर नहीं हो पा रहा है मच्छरों का नाश।
'कछुआ' भी लगाता है
लेकिन मच्छर काबू में नहीं आता है
आदमी ने ईजाद किया
'ऑल-आउट'—मच्छरों का यमराज
इससे भी नहीं डरे मच्छर महाराज
आदमी ने मच्छरदानी लगाई
लेकिन वह भी उसे सुरक्षा नहीं दे पाई
क्योंकि मच्छरों ने उसके अंदर भी
आने-जाने की तरकीब निकाल ली
आदमी चलाता रहा पंखा
और मच्छरों की बढ़ती गई संख्या
अपनी सुरक्षा के लिए
आदमी ने नए से नया प्रबंध कर लिया
लेकिन मच्छर ने आज अधिक शक्ति प्राप्त करके
अपना नाम 'डेंगू' धर लिया
जब अनेक नर-नार
होने लगे बीमार
फैलने लगा 'डेंगू बुखार'
तो देश के नेता जागे, हरकत में आई सरकार
चेतावनी देकर लोग समझाए
सावधानी बरतने और बचाव के तरीके सुझाए
पानी की तरह जनता के पैसे बहाए
छत्तीस लाख पोस्टर छपवाए
लेकिन डेंगूजी नहीं घबराए

अब लोकसभा में बन गया
ये डेंगू बुखार बहस का मुद्दा
एक दिन जब राज्यसभा में हो रही थी चर्चा
बोल रहा था एक नेता—
'बढ़ती गंदगी से बढ़ रहा है खतरा
हमें शहर को रखना होगा साफ-सुथरा।'
हो रहा था हो-हल्ला
और उपसभापति थीं नजमा हेपतुल्ला
तो अचानक सभागार के अंदर
घुस गया एक मच्छर
उपसभापति की उस पर
फौरन पड़ गई नजर
देखते ही बोलीं—
'कैसे और कहाँ से घुसा ये मच्छर?
अगर ये आया है चुनाव जीतकर
तो क्यों नहीं दी गई मुझे इसकी खबर?
और ये घुसपैठ है अगर
तो सुरक्षा गार्ड था किधर?
ये तो उसकी लापरवाही का परिणाम है
शायद इसीलिए हमारा सुरक्षा-प्रबंध बदनाम है
इसे तुरंत बाहर निकालो या मार डालो
मुझे याद आता है डॉयलॉग किसी फिल्म का
कि 'एक मच्छर आदमी को बना देता है हिजड़ा'
इतना सुनकर एक नेता उठा और बोला—
'महोदया, ये बात आदमी के लिए कही
नेताओं के लिए नहीं।'
ये वाक्य सुनते ही सभी नेताओं की आँखों में चमक आई
और सबने जोरदार तालियाँ बजाईं
फिर इधर-उधर नजर दौड़ाई
लेकिन मच्छर नहीं दिया दिखाई
यह सोचकर
कि नेता का कुछ नहीं बिगाड़ सकता मच्छर
बहस जारी रही, बेअसर, सब थे निडर
लेकिन वो मच्छर, बचाता हुआ नजर
जा बैठा एक खाली कुरसी पर

बैठते ही उसने देखा,
एक और मच्छर वहाँ पहले से मौजूद था
पहले ने नए को समझाया—
‘आवाज मत करना, चुपचाप रहना
हमारे बारे में बहस चल रही है, भाषणों को सहना।’
फिर धीरे से पूछा—‘कैसे आया?’
नए ने बताया—
‘एक बड़ा नेता कुछ देर पहले आया था अंदर
मैं भी आ गया उसके कुरते पर बैठकर।’
नए ने पुराने से पूछा—
‘आप आए कैसे और कब?’
जवाब मिला—‘बहुत सारे नेता घुस रहे थे जब
सुरक्षा गार्ड को चकमा देकर मैं भी घुस गया तब
बहुत देर से बैठा हूँ लाचार, थका-हारा
बस सुन रहा हूँ भाषण, देख रहा हूँ नजारा
छोटे, एक नेता ने तो गजब किया
सभागार में गाना ही गा दिया—
‘मच्छरों के कारण जनता को मलेरिया हुआ
पीड़ितों के कारण नेताओं को लवेरिया हुआ।’
जब तू अंदर आया था
तो उस सभापति ने इसे घुसपैठ बताया था
इस पर नया बोला—
‘अगर ये मानते हैं कि घुसपैठ का सिलसिला है
तो समझ लें, इसके लिए भी हमें
नेताओं का ही सहारा मिला है।
बड़े भाई, ये बगलवाला नेता लंबा-चौड़ा मुँह खोल रहा है
हमारे खिलाफ कुछ ज्यादा ही बोल रहा है
आप कहें, तो मैं इसे मजा चखाऊँ
इसके मुँह में घुस जाऊँ?’
पुराने ने मना किया—
‘मरेगा बेवकूफ, तुझे तो यह निगल ही जाएगा
और बाद में हमारे खिलाफ पूरी ताकत लगा के चिल्लाएगा
चुप कर, इससे डर।’
नए ने नया सुझाव दिया—
‘आप इजाजत दें तो अपना कमाल दिखाऊँ

इसके गाल को काट खाऊँ?'
इस पर बड़े ने छोटे को पहले धमकाया, फिर समझाया—
'नादान, मैं तुझे रहस्य रहा हूँ बता
ध्यान से सुन, अपना ज्ञान बढ़ा
नेता का दिलोदिमाग आम आदमी से होता है बिलकुल जुदा
इसके शरीर में भी कुछ खास तत्त्व पाए जाते हैं
जिसकी गंध से ही हम घबराते हैं
तू सूँघ के देख
काटना तो दूर, हम इनकी देह के नजदीक भी नहीं जा पाते हैं
और यदि कोई मनचला मच्छर
अपनी बहादुरी दिखाता है
किसी नेता को काटने की हिम्मत जुटाता है
याद रख, वो बाद में बहुत पछताता है
क्योंकि नेता पर काटने का कोई असर नहीं होता
बल्कि बेचारे मच्छर को ही 'एड्स' हो जाता है!'



❑

चश्मा आँखों का

गाँव के अनपढ़ आदमी को सता रहा था गम,
आँखें हुईं खराब, दिखने लगा कम
शहर आ गया दिखाने
देख के डॉक्टर साब बोले—
''अगर तुम मेरे हाथ से चश्मा लगवाओगे,
तो अखबार भी अच्छी तरह पढ़ पाओगे।''
सुनकर गाँव का वह आदमी बहुत खुश हुआ
फिर कहने लगा—
''जिंदगी भर आपके गुण गाऊँगा
सैकड़ों चश्मे तैयार रखना
मैं कल आऊँगा
और अपने साथ
गाँव के सारे अनपढ़ों को लाऊँगा।''



❑

मैं गाम तै आया

मैं गाम तै आया दिल्ली
रस्ता काट गई थी बिल्ली
एक छोरी सड़क पै मिल्ली
मैं बोल्या—'हे भाण'
सुण कै उसमें आया उफाण
कहण लगी—'मैं बहिन नहीं हूँ, मैं हूँ मिस्टर 'सिल्ली।'

मैं गाम तै आया दिल्ली
रस्ता काट गई थी बिल्ली
एक छोरी सड़क पै मिल्ली
पर वो निकल्या मिस्टर सिल्ली।

आगै चाल्या सिल्ली की चिल्ली तै डर कै
एक और छोकरा टकराया फिर मेरी नजर तै
वो कहता आवण लाग रह्या था—
'हे भाई जरा देख के चलो'
मैं फिर रुक्या मैं फिर झुक्या
इँघा नै देख्या, ऊँघा नै देख्या
कुछ भी कोन्या दिया दिखाई
मैं चाल पड़्या
मैं चाल पड़्या पर वोहे फिर आवाज आ गई—
'हे भाई जरा देख कै चलो'
जब उसनै यो दोहराया, मन्नै बड़ा गुस्सा आया
मैं बोल्या—रै भाई, के देख कै चालूँ
मन्नै कुछ देता नहीं दिखाई?
पहलम वो मुसकाया
फिर मेरे पै गुर्राया
कहण लग्या—'मैं भाई नहीं, मिस लिल्ली मेरा नाम है'
और 'हे भाई जरा देख के चलो' ये तो इक फिल्मी गान है'
मैं बोल्या—री लिल्ली!
मैं देख चल्या तेरी दिल्ली
मेरी तबीयत हो गई ढिल्ली
तू क्यूँ उड़वावै खिल्ली?
देखो रै यो किसा गजब-सा हो रा?
कि छोरा कहै मैं छोरी सूँ और छोरी कहै मैं छोरा

अच्छा तो इब चालूँ सूँ मैं लिल्ली
तेरे तै आच्छी म्हारे गाम की बिल्ली
उसका रस्ता काट्या तो मैं बच पाऊँगा
पर तन्नै रस्ता काट्या तो मैं कित जाऊँगा?

❑

रहस्यउद्घाटन

मंच पर खड़े कविजी
कविताएँ सुना रहे थे
और श्रोतागण
'बोरबोर' चिल्ला रहे थे
छोड़ीबड़ी तीन रचनाएँ पढ़ने के बाद
वे श्रोताओं के सामने
लगे गिड़गिड़ाने—'बस, चौथी और आजमाऊँगा
और समाप्त होने पर, इस रचना का रहस्य बताऊँगा'
श्रोतागण बरसे—
'नहीं, नहीं,
कविता बाद में सुनाइए
पहले हमें रहस्य बताइए'
कविजी काँपते हुए बोले—'बताता हूँ'
श्रोतागण चीखे—
'जल्दी बताइए, क्या देरी है?'
कविजी ने रहस्य खोला—
'यह चौथी कविता मेरी है!'

❑

भाषण का दान

बँगलादेश के प्रश्न पर, होने लगा विचार
नेताजी कहने लगे, 'जनता हो तैयार
कोई रोटीदाल दो, कोई धोतीकोट
कोई अपना खून दो, कोई सोनानोट।'
हमने नेता से कहा—'तुम भी दो कुछ दान'
'मैं तो भाषण दे रहा,' हँस बोले श्रीमान्।

❑

तीन बेटे

आओ अपने देश में
स्वतंत्रता की
रजत जयंती मनाएँ
प्रेम का प्याला पीकर
सांप्रदायिकता मिटाएँ
क्या हम आपस में
झगड़ते ही रहेंगे
बेकारी, क्या चलती ही रहेगी
गरीबी, क्या पलती ही रहेगी
पाकिस्तान से कहो
कि वह 'बँगलादेश' भूलकर
दोस्ती का हाथ बढ़ाए
और कर ले यकीन
कि अब भारत माँ के
दो नहीं, बेटे हैं तीन।

❑

पंद्रह अगस्त : तीन चित्र

एक

नेताजी पंद्रह अगस्त को
सवेरेसवेरे उठकर
एक मैदान में
बटोर रहे थे कंकड़पत्थर
हमने लगाया अनुमान
कि चल रहा है सफाई अभियान
इसलिए उनसे कह बैठे—
'आज तो खूब श्रम कर रहे हो श्रीमान?'
नेताजी बोले—
'भैया, शर्म करके मुझे क्या लेना है?
मुझे तो आज शाम
यहाँ भाषण देना है'

दो

पंद्रह अगस्त के अवसर पर
गाँव ने एक नेताजी बुलवाए
पता नहीं वे क्या पीकर आए
भीड़ को तमाशा दिखा दिया
झंडे के स्थान पर
अपनी टोपी को ही लहरा दिया!

तीन

पंद्रह अगस्त को नेताजी ने
अपने दल के कार्यकर्ताओं को बुलाया
भाषण में उन्हें समझाया—
'भयमुक्त हो जाओ
सख्त कदम उठाओ
बेकार में मत हँसो,
पार्टी को कसो।'
सभी कार्यकर्ता उसी वक्त
होकर भयमुक्त
घूमने लगे इधरउधर
कसने लगे आवाजें एक-दूसरे पर!



शादी

व्यक्ति की शादी
दो महाकाव्यों को
जोड़ती है, पिरोती है,
पहले चलती है 'रामायण'
और बाद में
'महाभारत' होती है।

समस्या

भूचाल आया
तो समस्या हुई खड़ी क्योंकि मेरी घरवाली
पलंग से नीचे गिर पड़ी
मैं उसके पास गया
और एक प्रश्न उठाया—
'भाग्यवान,
भूचाल आने से तू गिरी
या तेरे गिरने से भूचाल आया?'

❑

महँगाई और महबूबा

प्रिये
चढ़ते हुए भावों से
तेरे ये तेवर
कोयलेसी जलती हुई
तेरी ये आँखें
चावलोंसे खिले दाँतों पर
चीनीसी सफेदी
एक प्याजसा
माथे पर रखा बोरला
हल्दी की गाँठसे
तेरे ये होंठ
पहाड़ी आलूसी
तेरी ये नाक
वनस्पति घी के डिब्बे से
गोलगोल चेहरे पर
उड़द की दालसे
ये चेचक के दाग
लालटेनसी लटकती हुई
तेरी ये गरदन
और उसमें से
मिट्टी के तेलसा
टपकता हुआ पसीना
ओ हसीना
तू सचमुच मेरी जान है
चलतीफिरती
एक राशन की दुकान है!

बीवी बनाम कुरसी

होली के दिन
नेताजी ने पीके भंग
अपनी बीवी की बजाया
कुरसी पर ही डाल दिया रंग
और बोले—'असली तो यही है
जो मुझे सँभाल रही है
मेरे बालकों को पाल रही है
बीवी के लिए मैं ने परिवार में किया झगड़ा
अब कुरसी के लिए देश को लगाऊँगा रगड़ा
आप कहोगे कि देश में मुसीबत की घड़ी है
पर भाइयो, मेरे लिए तो कुरसी बड़ी है!



❑

जा रही हूँ

नेताजी की पत्नी
नेताजी से बोली—
'आप कहते हो कि आप
'समाजवाद' की तरफ जा रहे हो
जेठजी फरमाते हैं कि वे
'गांधीवाद' की तरफ जा रहे हैं
बच्चे बोल रहे हैं कि वे 'हिप्पीवाद' तरफ जा रहे हैं
तो मैं भी मेरे भरतार
कब तक करूँगी इंतजार?
तो सँभालो अपना घरबार
मैं इसी वक्त होके तैयार
अपने मायके
'गाजियाबाद' की तरफ जा रही हूँ!'

❑

राजनीति में धर्म

हमारा पड़ोसी
सवेरेसवेरे एक दिन
अपने घर की गंदी नाली में
चीनी डाल रहा था
शायद अपनी भड़ास निकाल रहा था
पूछने पर उसने बताया—
'मैं एक विचारधारा में
डुबकी लगा रहा हूँ
राजनीति में धर्म मिला रहा हूँ।'

❑

छात्रवंदना

हे मेरे छात्र, हे मेरे देवता
आज अपनी दैनिक डायरी भरने को
तुझे क्यो औ' कैसे पढ़ाऊँ?
और तेरा ये मुड ठीक करने को
तुझे किस तरह रिझाऊँ?

कल जब
मैं किसी फिल्मी हीरो की तरह मुसकराया था
तुझे भाया था
और मैंने जो फिल्मी गीत गुनगुनाया था
तूने सराहा था।

लेकिन आज
आज मैं बहुत दुखी हूँ मेरे देवता
किस तरह मुसकराऊँ?
तुझे सुनाने को, मनाने को, रिझाने को
रोजरोज नए गीत कहाँ से लाऊँ?

हे मेरे छात्र
शायद तू मेरा गुरु है, मैं तेरा चेला हूँ
तू जो अर्थ की बात करे
कहाँ से दूँ?
मैं तो सिर्फ किताबों के नोटों का थैला हूँ
ठहर, मत कस आवाज
मत हो नाराज
मालूम है
उस दिन जब तू सिनेमाघर में था
फिर भी मेरे रजिस्टर में था

ठहर
अपने को सँभाल मेरे देवता
अभी चाक मत निकाल मेरे देवता
मैं तुझे प्रश्नपत्र बता दूँगा
आवश्यकता पड़ी तो अंक भी बढ़ा दूँगा।

घर कैसे जाऊँ?

यही प्राब्लम है
क्या होगा इसका हल?
जिस बस में मैं रोज आता हूँ
उसको तूने जला दिया था कल
तो पैदल ही चला जाने दे
इतना कर दे अहसान
इंतजार करती होगी
मेरी बीवीजान!

❑

विद्यार्थी नहले टीचर दहला

कक्षा में
विद्यार्थियों का शोर सुनकर
प्रिंसिपल कहने लगा—'हे डियर टीचर
तुम बैठे हो
और ये विद्यार्थी
तुम्हारी परवाह न कर रहे रत्तीभर'!
टीचर बोला अपनी कुरसी से उठकर—
'मैं इनकी कौन सी परवाह कर रहा हूँ, सर'!

❑

नेकी कर दरिया में डाल

टहल रहे थे नदी किनारे
गुरु बेचारे
लगी ठोकर, चक्कर खाया
पत्थर से जा सिर टकराया
खून बहा, चीखेकरहाए
देख गुरु को
चेले आए
फर्ज निभाया, दया दिखाई
पट्टी बाँधी, दवा पिलाई
गुरुजी बोले—'धन्यवाद' तो
चेलों ने कुछ याद किया
उठा गुरु को जोर लगा के
बीच नदी में फेंक दिया
गुस्सा आया गुरुजी भड़के
हाथ जोड़कर बोले लड़के—
'आप से ही हम दोनों को
सीख मिली थी पिछले साल
'नेकी कर दरिया में डाल'।'

❑

अर्थ व्यर्थ और अनर्थ समर्थ

हिंदी की लग रही थी क्लास
और गुरुजी पढ़ा रहे थे 'तुलसीदास'
अच्छी तरह पढ़ने और समझाने के बाद
एक दोहे का अर्थ पूछा—
'चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर।
तुसलीदास चंदन घिसे, तिलक देत रघुवीर॥'
फिल्मीपत्रिका पढ़ने में मस्त
एक विद्यार्थी उठा
और दोहे का अर्थ यूँ बताया—
'चित्रकुट नामक सिनेमाघर पर
साधुसंतों की अपार भीड़ है
शायद फिल्म 'संन्यासी' लगी है
और बेचारा तुलसीदास
अपने बेटों
तिलक और रघुवीर के साथ
घर में बैठा
घिस रहा है चंदन
क्योंकि ब्लैक में भी टिकटें
मिली नहीं उस दिन।'

❑

गोरी म्हारे गाम की

गोरी म्हारे गाम की चाली छम-छम।
गलियारा भी काँप गया मर गए हम॥
आगरे का घाघरा गोड्या नै भेड़ै
चंडीगढ़ की चूनरी गालाँ नै छेड़ै,
जयपुर की जूतियाँ का पैराँ पै जुलम
गलियारा भी काँप गया मर गए हम।
बोरला, बाजूबंद, हार सज रह्या
हथनी-सी चाल पै नाड़ा बज रह्या,
बोल रहे बिछुए, दम मारो दम
गलियारा भी काँप गया मर गए हम।
घुँघटे नै जो थोड़ा-थोड़ा सरकावै
सब तिथियाँ का चंद्रमा नजर आवै,
सारा घूँघट खोल दे तो साधु माँगै रम
गलियारा भी काँप गया मर गए हम।
प्रीत के नशे में चाली डट-डटकै
चालती परी की पोरी-पोरी मटकै,
एटम भरे जोबन का फोड़ गई बम
गलियारा भी काँप गया मर गए हम।
टाबर सगले गाम के पीछै पड़ गे
देखते ही युवकाँ के होश उड़ गे,
बूढ़े-बूढ़े बैठ गए भर कै चिलम
गलियारा भी काँप गया मर गए हम।
कूदण लाग्या मन मेरा, बिंध गया तन
लिक्खण बैठ्या खूबसूरती का वरणन,
कोरा कागज उड़ गया, टूट गी कलम
गलियारा भी काँप गया मर गए हम।



❑

घूँघट का के करूँ

गोरी के चारों ओड़ाँ, जमघट का के करूँ?
तणे हुए इस तंबू से घूँघट का के करूँ?

तायस, फूफस, जेठाणी, सासू नै घेर ली
जिसणै चाह्या बहू अपणे चरणाँ में गेर ली।
चौंटकी भर छेड़े नणदी नटखट का के करूँ?
गोरी के चारों ओड़ाँ जमघट का के करूँ?

छोटे नै कोली भर ली, मेरे हिरदै लागी टीस
काका सिर पै हाथ फिरा कै देण लग्या आशीष।
बापू तो निभज्या, काका लंपट का के करूँ?
गोरी के चारों ओड़ाँ जमघट का के करूँ?

रात हुई तो महिलाएँ सब गावण लाग गी
बहू नै पास बिठा कै रात जगावण लाग गी।
मैं पोली तै भार पड्या चौखट का के करूँ?
गोरी के चारों ओड़ाँ जमघट का के करूँ?
तणे हुए इस तंबू-से घूँघट का के करूँ?

❑

आँख्याँ तै पिला दे

घुँघटा उठा ले मैं हो रहया बेताब,
आँख्या तै पिला दे थोड़ी सी शराब।

जिंदगी के पेड़ पै आ गया निखार
आ कै मेरे बिस्तरे पै बैठ गी बहार
गाल तो अनार सैं होंठ सैं गुलाब,
आँख्या तै पिला दे थोड़ी सी शराब।

सैकड़ों थे लव-लैटर मनै डाले
शायद फाड़ बैठे साली और साले
ले ल्यूँगा आज सारे खताँ का जवाब,
आँख्या तै पिला दे थोड़ी सी शराब।

बाह्याँ के घेरे तै तू सकै न निकल
मेरी ही आग तै तू रहै शीतल
तू चंद्रमा सै तो मैं आफताब,
आँख्या तै पिला दे थोड़ी सी शराब।

दोनों मिल रोज-रोज लिखाँगे दुगाना
अपणा ही मैटीरियल, अपणा छापाखाना
साल-डेढ़ साल में निकल ज्या किताब,
आँख्या तै पिला दे थोड़ी सी शराब।

हो री सै उदास, क्यूँ सोच में पड़ी
व्यर्थ मत जाण दे यो प्यार की घड़ी
बाद में लगा लियो प्यार का हिसाब,
आँख्या तै पिला दे थोड़ी सी शराब।



❑

ओ मेरी महबूबा

ओ मेरी महबूबा, महबूबा-महबूबा,
तू मन्नै ले डूबी, मैं तन्नै ले डूब्या।
मैं समझ गया तनै हिरणी,
फिर पीछा कर लिया तेरा, हाय करड़ाई का फेरा।
तू निकली मगर शेरणी, तनै खून पी लिया मेरा।
ओ मेरी महबूबा, महबूबा-महबूबा,
तू कर री ही-हू-हा, मैं कर रा बै-बू-बा।
कदे खेत में, कदे पणघट पै,
तनै खूब दिखाए जलवे, गामाँ में हो गे बलवे।
मेरे व्यर्थ में गोडे टूटे, जूताँ के घिस गे तलवे।
ओ मेरी महबूबा, महबूबा-महबूबा,
तू मेरे तै ऊबी, मैं तेरे तै ऊब्या।
कोय हो जो तनै पकड़ कै,
ब्याह मेरे तै करवा दे, म्हारी जोड़ी तुरत मिला दे।
मेरी गुस्सा भरी जवानी, तनै पूरा मजा चखा दे।
ओ मेरी महबूबा, महबूबा-महबूबा,
फिर लुटै तेरी नगरी और लुटै मेरा सूबा।
ओ मेरी महबूबा...।

❑

फागण रुत मस्तानी

यो फागण रितु मस्तानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै
कहै आँख, देख म्हारे कानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै!

लगै बरखा, सरदी प्यारी
पण फागण की छवि न्यारी
हर साल नया आवैगा
आवैंगी रितुएँ सारी
पण आवै नहीं जवानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै!

तनै काट्या मेरा पत्ता
मैं सूख हो गई गत्ता
मैं अड़ै गाम में तड़पी
तू पड्या रहया कलकत्ता
तनै एक न मेरी मानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै!

तड़का मेरी हँसी उड़ावै,
संध्या मेरा खून जलावै
मनै सोती देख अकेली
जले रात खाण नै आवै
बिन पिया किसी जिंदगानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै!
चंदा मेरा चेहरा चाटै
तकिया बस दर्द नै बाँटै
उस वक्त याद तू आवै
जद माछर गाल नै काटे
टुक देख मेरी कुरबानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै!

सेवा सै घर-आली की
रोटी अपणी थाली की
तू घर का छोड़ पराँठा
उत घास चरै नाली की
डूबे कई ज्ञानी-ध्यानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै
कहै आँख देख मेरे कानी, इब परदेसाँ मत जाइयो रै!



बोल मेरी फुलझड़ी

भौंरा तो रस पी कै उड़ग्या, फूल हुया बदनाम
बोल मेरी फुलझड़ी तू राम-राम-राम!

बरस मनाया, दिवस मनाया, आ तेरी रात मनाऊँ
तू लेटी हो सेजाँ पै, मैं तेरे चरण दबाऊँ
पान की बेगम तू मेरी, मैं हुक्म का गुलाम
बोल मेरी छम्मकछल्लो राम-राम-राम!

हरिद्वार का इक संन्यासी बीच बंबई आया
फिल्म देख कै 'संन्यासी' उसका सिर चकराया
गंगा जल नै छोड़ पी गया दो ह्विस्की के जाम
बोल मेरी हेमा मालिनी राम-राम-राम!

जब तू अपणी एड्डी ठा कै लेण लगी अँगड़ाई
हम कवियाँ की बिना दोष की बण गी एक रूबाई
कब्र फाड़ कै खड्या हो गया तुरत उमर खैयाम
बोल मेरी मोमबत्ती राम-राम-राम!

अड़ै खड़ी हो, उड़ै बैठज्या, जी चाहे उत लेट
सब कुछ करवा देगा प्यारी, तेरा पापी पेट
खाणे वाले खाण लाग रे, पिस्ते और बादाम
बोल मेरी सूखी रोटी राम-राम-राम!

क्यूँकर होगा इस दुनिया में मेरा-तेरा मेल
मैं छकड़ा सूँ एक गाँव का, तू शहराँ की रेल
तू सै चढ़ती सुबह सुहाणी, मैं सूँ ढलती शाम
बोल मेरी सुरमेदानी राम-राम-राम!

नेता डूबे, अफसर डूबे, डूब गए व्यापारी
राजनीति की बाढ़ में डूबे सब नर-नारी
तू ऐसी फैशन में डूबी, डूब गया मेरा गाम
बोल मेरी 'मिस इंडिया' राम-राम-राम!

पाणी बरसै

उत पाणी बरसै, इत लाग रही आग री
यो आग प्यार की, इस आग तै मत भाग री!

अंबर का चंदा बेचारा जल नै तरस रह्या सै
आँगण में महारे चंदा पै पाणी बरस रह्या सै
भीज गया ओढ़णा थारा, भीज गई घाघरी
उत पाणी बरसै, इत लाग रही आग री!

गीली-गीली और नशीली कर गी बरखा राणी
ज्यूँ दारू की बोतल के माँह राम मिलायो पाणी
थारे तन में समाया पूरा अंगूराँ का बाग री
उत पाणी बरसै, इत लाग रही आग री!

मैं थारी चंदा सूँ तो पिया तुम मेरे सूरज सो
ल्यो मैं थारे पास आ गई होले जो होणा हो
सूख ज्यागा ओढ़णा म्हारा, सूख ज्यागी घाघरी
उत पाणी बरसै, इत लाग रही आग री
यो आग प्यार की, इस आग तै मत भाग री!

❑

घर में रहणा हो तो

घर में रहणा हो तो रह ले, नार की तराँ
खेत समझ मत रोंदै फसल, 'बिजार' की तराँ!

पीट रही बच्चा नै मन-मस्तिष्क नहीं ठंडा
तड़कै-तड़कै उठा लिया तनै हाथ में डंडा
जलण लाग री बरसाँ तै, अंगार की तराँ!

साँच कहूँ तो फूहड़ फौरन मान ले बुरा
झूठी गर तारीफ करूँ तो गावै बेसुरा
गुप्त बात नै फैला दे, अखबार की तराँ!

होम-मिनिस्टर बण कै, करती रहवै गुप्तचरी
एक रात बाहर रहग्या तो जाँच पै जाँच करी,
घर लौट्या तो डाँट्या, थानेदार की तराँ!

कदे-कदे नैनों तै तन्नै तीर चलाए थे
कदे नजाकत की ताकत के बम बरसाए थे
इब गरदन पै लटक रही, तलवार की तराँ!

फोन, भोज फिर सैल-सपाटा, सज्जण का रगड़ा
हम तो तेरी जनता साँ, तेरा खर्च बड़ा तगड़ा,
घर का बजट बिगाड़ दिया, सरकार की तराँ!

प्यार-मुहब्बत की खातर तनै मुँह लटकाया सै
'तरेसठ' तै 'छतीस' बणे, सब तेरी माया सै
ठाली बैठी खाण लगी, बीमार की तराँ!
घर में रहणा हो तो रहले नार की तराँ!

❑

कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!

कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!
मेरा नाम फकीरा सै और गिन्नी तेरा नाम,
कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!

आयाराम का बेटा मैं, तू गयाराम की बेटी
मैं तो सूँ इंडीकेटी और तू सै सिंडीकेटी
जिसनै अपना ब्याह करवाया, वो दलबदलू राम,
कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!

मैं नजले का मरीज सूँ तू खुजली की मारी सै
मैं तो आधा पागल, तेरै दिल की बीमारी सै
जिसनै ब्याह करवाया, करता डाक्दरी का काम,
कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!

मेरा मुखड़ा सुंदर सै तो तेरी सूरत भद्दी
मैं छह फुट का लंबा अर तू चार फुटाँ की पिद्दी
जिसने अपना ब्याह करवाया, वो काना गुलफाम,
कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!

मैं तो सूँ दुबला-पतला और तू सै थल-थल मोटी
मैं हरियाणे का हिरणा तू राजस्थानी झोटी
जिसने अपना ब्याह करवाया घोड़ा बिना लगाम,
कैसी जोड़ी मिलाई रे राम!

मुझको एक चाय का प्याला, तू पीवै सै दूध
तनैं सेब अंगूर चाहिए, मनैं मिलैं अमरूद,
जिसने अपना ब्याह करवाया चूसै लँगड़े आम,
कैसी जोड़ी मिलाई रे राम!

मैं कविताएँ लिक्खूँ सूँ, तू लिक्खै रोज कहानी
मैं 'दैनिक' का राजा सूँ, तू सै 'मासिक' की रानी
जिसने अपना ब्याह करवाया संपादक बदनाम,
कैसी जोड़ी मिलाई रे राम!

दोनों में इतना अंतर पर आधी उमर गुजारी
ऐसे ही प्रिय रोते-गाते कट जाएगी सारी
लेकिन ब्याह करवाणे वाला छोड़ गया सै गाम,

कैसी जोड़ी मिलाई मेरे राम!

❑

धर्म और विज्ञान

चाहे धर्म हो या विज्ञान
आज दुखी इनसे इनसान
मेरी बात को मान रे भैया, मेरी बात को मान!
सही मार्ग से दोनों भटके, लोग बिचारे अधर में लटके
इधर धर्म के नाम पे दंगे, उधर हैं विस्फोटों के झटके
भूल गए मानव कल्याण, जगह-जगह बिकता ईमान।
मेरी बात को...

इधर बेचते हैं हथियार, उधर लगा नफरत-बाजार
उग्रवाद, आतंकवाद, दोनों बन गए हिस्सेदार
समझो गीता और कुरान, सब के हित में बाँटो ज्ञान।
मेरी बात को...

नजर न आए कहीं अमन, दुखी है प्रजा, दुखी वतन
हत्या, मारकाट या झगड़े, भाईचारा हुआ हवन
मुश्किल में प्राणी की जान, इस संकट पर क्यों नहीं ध्यान?
मेरी बात को...

एक ने बम का लिया सहारा, दूजे ने पाखंड उभारा
मिले हथियार कट्टरपंथी को, यहाँ-वहाँ निर्दोष को मारा
मिलता हथियारों का दान, खुश हो जाता पाकिस्तान।
मेरी बात को...

बहुत बुरा यह वक्त है आया, दुःख-ही-दुःख हर जगह पे पाया
प्राणी जो ईश्वर ने जनमा, क्यों सहमा है, क्यों घबराया?
ये दोनों जब गुणों की खान, क्यों बनते जाते अनजान?
मेरी बात को...

वैज्ञानिक या धर्म का नेता, सोचो क्या मानव को देता
अच्छाई जब नष्ट हो गई, लाभ नहीं जो बाद में चेता
दोनों से दुनिया की शान, मत भूलो अपनी पहचान।
मेरी बात को...

खत्म हो रही है अब आस, इत विध्वंस, उत अंधविश्वास
दिखते हैं परिणाम भयंकर, मानवता का सत्यानाश
हावी हो गए हैं शैतान, चिंतित देख रहा भगवान्।
मेरी बात को...

दोनों से मैं कहता आओ, मानवीय दृष्टि अपनाओ
नष्ट करो सब हथियारों को, प्यार, शांति बाँटते जाओ
दोनों ईश्वर के वरदान, फिर काहे का है अभिमान?
मेरी बात को मान रे भैया, मेरी बात को मान!

❑

बुढ़ापे में भी हसीन

जीने का तुम यकीन लगती हो,
दिल को दिल की मशीन लगती हो!
तुम ही बीवी, तुम्हीं हो टी.वी. भी,
जब भी देखूँ हसीन लगती हो!

प्यार करने की पहल याद करो,
मन भी जाएगा बहल, याद करो!
चाँदनी रात थी, थे हम दोनों,
बाँहों में 'ताजमहल' याद करो!

जिंदगी भर वचन निभाया है,
तेरे स्वर में ही स्वर मिलाया है!
तुम पे मरते थे हम जवानी में,
अब वो मरने का वक्त आया है!

❑

तू बावन बरस की

तू बावन बरस की, मैं बासठ बरस का,
न कुछ तेरे वश का, न कुछ मेरे वश का!

कहाँ है मेरा तेरे नजदीक आना
कहाँ है तेरा मुसकराना, लजाना
हुआ खत्म अपना वो मिलने का चसका।
न कुछ...!

मैं था खूबसूरत, तू थी इक हसीना
वो सर्दी की रातें, पसीना-पसीना
मगर रात भर अब तो खाँसी का ठसका।
न कुछ...!

जवानी की घड़ियाँ थीं मस्ती में बीती
ये तन की सुराही हुई अब तो रीती
करा इम्तहाँ चाहे तू नस-नस का,
न कुछ तेरे वश का, न कुछ मेरे वश का!

❑

बुढ़ापा कैसे कटै?

टाटा कर कै निकल गी जवानी, बुढ़ापा कैसे कटै?
ताने मारै सै रोज जनानी, बुढ़ापा कैसे कटै?

मन तो अपणा मर्या-मर्या और तन सै पोला-पोला
हुस्न देख नजदीक पेट में बणै गैस का गोला
क्या इसे भी कहैं जिंदगानी, बुढ़ापा कैसे कटै?

युवक छेड़ कै सलाह दे रहे, जाओ कासी-काबा
दर्द बढ़ावैं सुंदरियाँ जब बोलैं बाबा-बाबा
सारे मौसम करैं छेड़खानी, बुढ़ापा कैसे कटै?

कभी किसी फिल्मी हीरो तै शक्ल मिलाया करते
बिना बात सड़कों पै मुँह तै ह्विसिल बजाया करते
इब तो उतर्या सै चेहरे का पानी, बुढ़ापा कैसे कटे?

शादी का दिन याद कराँ तो सिर चक्कर खावै सै
हनीमून की जगह ईब हनुमान याद आवै सै
याद कर कर कै रातें सुहानी, बुढ़ापा कैसे कटै?

शरीर तो था एक हमारा 'अर्थ' निकाले दर्जन
'अर्थ' खोजने के चक्कर में बीत्या सारा जीवन
'अर्थ' निकल्या कि 'अर्थी' उठानी, बुढ़ापा कैसे कटै?

उर्दू में जो तनख्वाह सै वो हिंदी में सै वेतन
तंग हुए तन खा-खा इब तो बेतन करद्यो भगवन्
आत्मा सब कहैगी कहानी, बुढ़ापा कैसे कटै?
टाटा कर कै निकल गी जवानी, बुढ़ापा कैसे कटै?



❑

अरै निगोड़्डा

अरै निगोड़्डा, दिल्ली की मनै सैर करा दे रै
कार-वार मैं ना बैठूँ, ठेलो मँगवा दे रै!

लाल किलो, घर को घंटो, जाऊँगी कुतबी-किल्ली
उस किल्ली पै चढ़कर कै देखूँगी सारी दिल्ली
उस किल्ली पै बैठ मेरा फोटू खिंचवा दे रै!
अरै निगोड़्डा...

चौंक-चाँदणे में घूमूँगी, जणे सिधाई घोड़ी
फिर 'अशोक' के होटल में खाऊँगी चाट-पकौड़ी
कनाट के सर्कस में सारी रात बिता दे रै!
अरै निगोड़्डा...

खोल घूँघटा चाल्लूँगी तू चाह्वै जित ले जाइए
रोज रेड़वा बोलै सै मनै 'बॉबी' फिल्म दिखाइए
हम दोनों कमरा में बंद, चाबी गुमवा दे रै!
अरै निगोड़्डा...

मनै सुण्या सै हिप्पी-हिप्पण घूमैं सै दिल्ली में
उनकी सूरत इसी बतावैं, फरक नहीं बिल्ली में
इक हिप्पण की देवरया तै जोट मिला दे रै!
अरै निगोड़्डा...

छब्बीस जनवरी की परेड भी ओ साजन दिखलाइए
राष्ट्रपति की पत्नी तै अपणी पत्नी मिलवाइए
बीच 'इंडिया गेट' के मेरी खाट बिछा दे रै!
अरै निगोड़्डा...

फेर मनै तू इंदिराजी के दफ्तर में ले जाइए
जिस तैं सगले मर्द डरैं, उस नारी तै मिलवाइए
उसकी कुरसी के नीचे की धूल चटा दे रै!
अरै निगोड़्डा...!



हम हैं नेता हिंदुस्तानी

कुरसी के हैं भक्त सभी हम, देशप्रेम तो है बेमानी
कूट-कूटकर भरी हुई है हम सारों में बेईमानी
हम हैं नेता हिंदुस्तानी!



राम नाम जपते हैं लेकिन राम से कभी नहीं डरते हैं
राष्ट्रवादी हैं, राष्ट्र के हित में कोई काम नहीं करते हैं
चले गए जिन नेताओं ने देश की खातिर दी कुरबानी
हम हैं नेता हिंदुस्तानी!

सत्ता पाने, फिर जमने को, घटिया चालें हम चलते हैं
धन इतना हम जोड़ धरें, परिवार हमारे ही पलते हैं
इस कुरसी का लाभ उठाएँ, कुरसी तो है आनी-जानी
हम हैं नेता हिंदुस्तानी!

गुंडे और लफंगे हमने सब हमदर्द बना रक्खे हैं
फिर भी अपनी रक्षा खातिर छह-छह गार्ड लगा रक्खे हैं
जनता है सब सहन करेगी गुंडागर्दी औ' शैतानी
हम हैं नेता हिंदुस्तानी!

❑

रंभा हो

कुछ ऐसे गीत लिखो
फिर धुआँधार बिको, रंभा हो!
सुनकर रंभा-रंभा, गाय मेरी रँभाई
कुत्ता लगा भौंकने, भैंस ने ली अँगड़ाई
ओ मेरे प्यारे गधो
अब तुम भी गाने लगो, रंभा हो!
यह गीत अगर तुम गाओ तो गला बने गलियारा
लय, स्वर-ताल को छोड़ो बस बाजा बाजे न्यारा
अरे, खाली कनस्तरो
तुम गीत के साथ बजो, रंभा हो!
गाएँ कॉलेज-दफ्तर, रटें कचहरी इसको
कथा-कीर्तन छोड़ो, बस घर-घर में हो डिस्को
पश्चिमी धारा में बहो
तुम फिर डूबो या तिरो, रंभा हो!
तुमने कर ली बी.ए. अब एम.ए. की तैयारी
इत-उत भाग रहे हो, पर भाग्य में है बेकारी
नौकरी चाहे न मिलो
पर सड़क पे गाते फिरो, रंभा हो!

❑

मून पे हनीमून

छोरा : कोई भी तारीख हो लेकिन रहे महीना जून
धरती तो है अपनी माता, मामा अपने मून
शादी अपनी हो धरती पे, मून पे हो हनीमून
दोनों : हम मून पे मनाएँगे हनीमून
हम...

छोरी : सुना है वहाँ पवन नहीं है
छोरा : पवन को बुलवाएँगे
देवता जब आएँगे
पवनसुत आ जाएँगे
छोरी : सुना है वहाँ जल भी नहीं है
छोरा : वरुण को बुलवाएँगे
वहाँ शिव भी आएँगे
साथ गंगा लाएँगे
रंग-बिरंगे फूलों से फिर वहाँ की धरा सजेगी
पहला मिलन हमारा होगा, सृष्टि नई रचेगी
कुछ वर्षों में वहीं बसेगा शिमला, देहरादून
दोनों : हम मून पे मनाएँगे हनीमून
हम...

छोरी : इजाजत नहीं मिली तो?
छोरा : चाँद को समझाएँगे
चाँद है मामा अपना
ये उन को बतलाएँगे
धरती माँ की चिट्ठी के संग राखी ले जाएँगे
राखी बाँधेंगे मामा को, नाचेंगेगाएँगे

छोरी : धरती माँ को चंदा मामा करेंगे टेलीफून
दोनों : हम मून पे मनाएँगे हनीमून।
हम...

छोरा : पता है माँ क्या गाती थी?
छोरी : लल्ला लल्ला लोरी
छोरा : कहे थी इन्हें दूर के मामा
छोरी : पी दूध की कटोरी
दोनों : भेंट करेंगे मामाजी को धरती माँ की मिट्टी

मामा खुश हो जाएँगे जब पढ़ें बहिन की चिट्ठी
हम दोनों में दौड़ रहा नाना सूरज का खून
हम मून पे मनाएँगे हनीमून!

❑

यो मौसम जुलम करै

छोरा : ऋतु-राजा रूप धरै
यो मौसम जुलम करै
इस पै भी ओ महबूबा, तू रहै सै परै-परै!
छोरी : ऋतु-राजा रूप धरै
यो मौसम जुलम करै
यो नखरा मेरे प्यार का, मैं रहूँ सूँ परै-परै!
छोरा : यो पवन-परी कह्वै सै, खा प्रेम-नदी में गोता
वो हर्या-भर्या रह्वै सै, जो प्यार खेत में होता
बिन तेरे नहीं सरै
तेरा संग ही रंग भरै
इस पै भी ओ महबूबा, तू रहै सै परै-परै!
क्यूँ रहै सै परै-परै?
छोरी : तुम मुझ में आज खो गए, नजराँ नै जान लिया सै
हम दो दिल एक हो गए, यो मन्नै मान लिया सै
तुम बिन भी नहीं सरै
तेरा संग सै रंग भरै
यो ले मैं धोरै आई, अंग लग ज्या मती डरै।
इब नहीं सूँ परै-परै!
दोनों : ऋतु-राजा रूप धरै
यो मौसम जुलम करै
ले खतम कर दिया हमनै यो रहणा परै-परै!

❑

चूहे, तुमको नमस्कार है

चुके नहीं इतना उधार है
महँगाई की अलग मार है
तुम पर बैठे हैं गणेशजी
हम पर तो कर्जा सवार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है॥

भक्तजनों की भीड़ लगी है
खाने की क्या तुम्हें कमी है
कोई देवे लड्डू, पेड़े
भेंट करे कोई अनार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है॥

परेशान जो मुझको करती
पत्नी केवल तुमसे डरती
तुम्हें देखकर हे चूहेजी
चढ़ जाता उसको बुखार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है॥

ऑफिस-वर्क एकदम निल है
फिर भी ओवरटाईम बिल है
बिल में घुसकर पोल खोल दो
सोमवार भी रविवार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है॥

कुरसी है नेता का वाहन
जिस पर बैठ करे वह शासन
वहाँ भीड़ है तुमसे ज्यादा
यह कुरसी का चमत्कार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है॥

राजनीति ने जाल बिछाए
मानव उसमें फँसता जाए
मानवता तो नष्ट हो रही
पशुता में आया निखार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है॥

अगर मैं विश्व-सुंदरी होती

अगर मैं विश्व-सुंदरी प्रतियोगिता में भाग लेती तो अवश्य जीतती, और अगर मैं विश्व-सुंदरी होती तो फिल्म उद्योग मेरा स्वागत करता—

निर्माता की चिट्ठी आती
हीरोइन बन मेरी एंट्री
एक हँसाती, पाँच रुलाती
श्रीदेवी मुझको समझाती
हेमा अपना दर्द बताती
जूही अपना मित्र बनाती
माधुरी अपने घर ठहराती
उसके बेडरूम में सोती।
अगर मैं विश्व-सुंदरी होती॥

मेरी माँग डबल हो जाती
जब भी कोई चुनाव आता
हमरे कंडीडेट जिता दो
हर दल-नेता मुझे बुलाता
मुझे देखने, मुझको सुनने
लोगों का लग जाता ताँता
मटक-मटककर भाषण देती
नेता मुझसे आँख लड़ाते
सुंदरता के बोझ को ढोती।
अगर मैं विश्व-सुंदरी होती॥

हर दल-नेता मुझसे कहता
मेरे ही दल में आ जाओ
कहीं पे नाचो, कहीं पे गाओ
बस चुनाव में धूम मचाओ
झूठे वादे, गलत घोषणा
कोई हथकंडा अपनाओ
किसी तरह से जीत दिलाओ
मनचाही कुरसी को पाओ
क्या मैं अपनेपन को खोती?
अगर मैं विश्व-सुंदरी होती॥

सोनिया और गुजराल बुलाते

आओ घर पर खाओ खाना
कभी केसरी कभी मुलायम
मेरे घर पर आना-जाना
शादी का प्रस्ताव अटल का
लेकिन मेरी ना-ना, ना-ना
देवीलाल खुशामद करता
लालू हो जाता दीवाना
रबड़ी देवी मन-ही-मन रोती।
अगर मैं विश्व-सुंदरी होती॥

सोचो, नेताओं की खातिर
क्या मैं झूठ बोलती फिरती?
सुंदरता का लिये सहारा
क्या मैं चाल-चलन से गिरती?
क्या मैं खुद्दारी को तजकर
गंदी राजनीति में घिरती?
बेईमानी के पैरों में
क्या इक कोमल कली बिखरती?
बदनामी को कहाँ सँजोती?
अगर मैं विश्व-सुंदरी होती॥

होली पर हुई खत्म ठिठोली
सुनो अंत में सच्ची बोली
नफरत छोड़ो, प्यार बढ़ाओ
यही ईद है, यही है होली
नेता समझें देश के हित को
सब कुरसी को मारें गोली
भारत में भाईचारे से
भारत माँ की भर दें झोली
सबको इक धागे में पिरोती।
अगर मैं विश्व-सुंदरी होती॥

❑

नानक दुखिया सब संसार

बूढ़ा बाप पड़ा बीमार
माँ की बेटे से तकरार
इस का रूठ गया है यार
उसका भाग गया भरतार
नानक दुखिया सब संसार।
गुंडा लेकर हुआ फरार
किस महिला का छिन गया हार
किसको कुचल गई है कार
जाँच कर रहा थानेदार
नानक दुखिया सब संसार।
कहीं पे सूखा है इस बार
कहीं बाढ़ से हाहाकार
माथा पीट रहा फनकार
डिग्री चाट रहा बेकार
नानक दुखिया सब संसार।
किस पर किसका अत्याचार
तू भी कर ले सोच-विचार
किसको हुआ रूस से प्यार
चिंतित अमरीकी सरकार
नानक दुखिया सब संसार।
दु:खी भक्त हैं, दु:खी पुजारी
पुरुष दु:खी हैं, दुखिया नारी
सत्संग में गुंडा मौजूद
मंदिर में गोला-बारूद
गुंडे माँग रहे अधिकार
नानक दुखिया सब संसार।
दफ्तर पर संकट है भारी
चिंतित हैं बाबू, अधिकारी
इसको रुला रही लाचारी
उसको रुला रही गद्दारी
दोनों मान चुके हैं हार
कौन करे किसका उपचार
नानक दुखिया सब संसार।
इंजीनियर भटकता दर-दर

घर पर बैठा है बैरिस्टर
अध्यापक हो या व्यापारी
सब रोते हैं बारी-बारी
सारे माँग रहे अधिकार
नानक दुखिया सब संसार।
नेताजी माइक पर आए
घबराए से, मुँह लटकाए
भाषण हो न सका तैयार
जनता दु:खी, दु:खी सरकार
नानक दुखिया सब संसार।
इक नेता पहुँचे सज-धजकर
लिखे हुए भाषण को रटकर
लेकिन उनको मिला न अवसर
अच्छा होता, रहते घर पर
बिन भाषण नेता बेकार
नानक दुखिया सब संसार।
निर्माता ने फिल्म बनाई
नाम फिल्म का रखा 'सच्चाई'
अभिनेता ने जान लगाई
पूरी अभिनय-कला दिखाई
फिल्म आई, रोया अभिनेता
वह फिल्म में कहीं नहीं था
सच के ऊपर झूठ सवार
नानक दुखिया सब संसार।
करोड़पति ने बेटा ब्याहा
कैश मिल गया जितना चाहा
ले दहेज कुनबा मुसकाए
वर की खुशी कही न जाए
रात हुई वर का मन डोला
दुलहन का घूँघट जा खोला
सुहागरात का सीन निराला
दुलहन ने पिस्तौल निकाला
कहा—'दहेज सब वापस कर दो
कैश लिया जो, दुगना धर दो
मुझको तू है क्या समझा रे!

मैं हूँ खूँटन देवी प्यारे।'
रोया दूल्हे का परिवार
नानक दुखिया सब संसार।

❑

गजलें

गजल की गजल

टीले पे रेंकती है वो जो खर की गजल है
रैली में गूँजती वो मिनिस्टर की गजल है।

सुनता रहा मजदूर वो मालिक की गजल थी
मालिक ने कर दी हूट ये नौकर की गजल है।

दफ्तर में उनके सामने स्टेनो रही बैठी
दिल थाम के सुन लीजिए, अफसर की गजल है।

हँस के जो सुनाया गया बीवी का गीत था
रो-रो के पढ़ी ये किसी शौहर की गजल है।

उनको मलेरिया है तो लेटे हैं खाट पर
जिसका असर हुआ है वो मच्छर की गजल है।

आटा नहीं तो पेट अपना गाने लगा है
खाली पड़े हुए इस कनस्तर की गजल है।

'टायर' के लेख छप रहे हैं पत्रिकाओं में
रद्दी में फेंक दी है वो शायर की गजल है।

दुल्हन नई को छोड़ के दूल्हा चला गया
जेठों की छेड़छाड़ पे देवर की गजल है।

हम छोड़ देंगे पार्टी, कर लेंगे दल-बदल
कुरसी के लिए ये किसी लीडर की गजल है।

वे और तुम

मुहब्बत की रियासत में, सियासत जब उभर जाए
प्रिये तुम ही बताओ, जिंदगी कैसे सुधर जाए!
चुनावों में चढ़े हैं वे, निगाहों में चढ़ी हो तुम
चढ़ाया है तुम्हें जिसने, कहीं रो-रो न मर जाए!
उधर वे जीतकर लौटे, इधर तुमने विजय पाई
हमेशा हारनेवाला, जरा बोलो किधर जाए!
वहाँ वे वोट के इच्छुक, यहाँ तुम नोट की कामी
कहीं यह देनदारी ही, हमें बदनाम कर जाए!
पुजारी सीट के वे हैं, पुजारिन सेज की तुम हो
तुम्हारे को समझने में कहीं जीवन गुजर जाए!
उधर चमचे खड़े उनके, इधर तुम पर फिदा हैं हम
हमें अब देखना है भाग्य किसका कब सँवर जाए!
वहाँ वे दल बदलते हैं, यहाँ तुम दिल बदलती हो
पड़ी है बान दोनों को कि वचनों से मुकर जाए!
उन्हें माइक से मतलब है, तुम्हें भी मायका प्यारा
तुम्हारा क्या बिगड़ता है उठे कोई या गिर जाए!
तुम्हारा शब्द तो मेरे लिए रोटी का लुकमा है
जरा तकरीर दे डालो कि मेरा पेट भर जाए!

❑

देश बड़ा या दल

स्वतंत्रता की सिल्वर जुबली, हमने आज मनाई
दो दलबदलू नेताओं में हो गई हाथापाई

कपड़े झीरमझार हो गए, टोपी हुई हवाई
तन तो उनका लगा दीखने, मन की टोह न पाई

राजनीति के रंगमंच पर होने लगी लड़ाई
दाँवपेंच दोनों के देखे, हँसते लोगलुगाई

दोनों की कुश्ती देखी तो भारत माँ घबराई
बेटों का मन साफ बना दे ऐसी कहाँ दवाई?

वोटदेवता को दोनों ने ऐसी चोट लगाई
बिठलाकर उनको मोटर में बोतल है खुलवाई

झूठ, पाप हँसते रहते हैं रोती फिरे सच्चाई
जीत गया अन्याय, न्याय ने अपनी नाक कटाई

धोखाधड़ी, घूसखोरी ने अपनी धाक जमाई
सरकारी अफसर ने ही, सरकार बुरी बतलाई

कुरसी के चक्कर में दलबदलू ने धूम मचाई
दल चालीस बदल डाले पच्चीस वर्ष में भाई

आज दलों की दलदल में है देश की नाव फँसाई
देश बड़ा या नेता का दल? मेरी समझ न आई।



कड़वा-कड़वा प्यार

कड़वा-कड़वा प्यार हमको चाहिए
मीठी-सी तकरार हमको चाहिए।
हाँ-ही-हाँ में क्या मजा है डार्लिंग
थोड़ा सा इनकार हमको चाहिए।
मजनूँ जैसा मर्द तुमको चाहिए
लैला जैसी नार हमको चाहिए।
दो दिलों को जोड़ने के वास्ते
तार या बेतार हमको चाहिए।
है निराली माँग अपनी दोस्तो
जीतकर भी 'हार' हमको चाहिए।
महिला कंडक्टर ने बस में कह दिया
बा-टिकट भरतार हमको चाहिए।
आठ बच्चे जन के वह रोने लगी,
छोटा सा परिवार हमको चाहिए।
दोस्ती के हाथ अपने बढ़ रहे
सुख भरा संसार हमको चाहिए।

❑

राशनी गजल

आज हम उनका पीछा करेंगे
शक्ल भोंड़ी है फिर भी मरेंगे।
उनका नाखून भी उस्तरा है
छेड़खानी से आशिक डरेंगे।



उनके तेवर चढ़ेंगे कहाँ तक
आज भावों से तुलना करेंगे।
शुक्रिया मेरी सरकार तेरा
क्यू में दीदार उनका करेंगे।
आज ऑयल हुआ है उड़न-छू
क्या पसीने से बोतल भरेंगे?
ग्यारह घंटे खड़े हो गए हैं
मौत का दोष किस पे धरेंगे?
हाय महँगाई भी है मुसीबत
शादी से हम हमेशा डरेंगे।
राशनी ये गजल हमने लिख दी
ब्लैक में इसका सौदा करेंगे।

❑

खाट अपनी खड़ी हो गई

ब्याह से गड़बड़ी हो गई
खाट अपनी खड़ी हो गई।

डोर कँगने की ऐसी बँधी
हाय रे हथकड़ी हो गई।

हम कहैं हम तो सूली चढ़े
वे कहैं घुड़चढ़ी हो गई।

ऐसी वरमाला पहनी कि अब
आँसुओं की लड़ी हो गई।

फूल समझा था हमने जिसे
अब वही फुलझड़ी हो गई।

एक के बाद छह हो गए,
बालकाँ की झड़ी हो गई।

उसको घरवाली जब से कहा,
घर में उसकी तड़ी हो गई।
किसने जादू किया भैंस पर
देखिए लोमड़ी हो गई।

नींद में अपनी कोठी बनी
जगते ही झोंपड़ी हो गई।

दिन में तारे दिखाई दिए
आँख कितनी बड़ी हो गई!

शक्ल पे बारह बजने लगे
शक्ल मेरी घड़ी हो गई।

नींद आती नहीं रात भर
जब से बिटिया बड़ी हो गई।

❑

क्या हुआ

हमने जो नया साल मनाया तो क्या हुआ
शुभकामना का दादरा गाया तो क्या हुआ?
रो-रो के बिता देंगे दिवस तीन सौ चौंसठ
हँस-हँस के दिवस एक बिताया तो क्या हुआ?
बस रूखी-सूखी रोटियाँ पाओगे साल भर
हलवा बना के एक दिन खाया तो क्या हुआ?
घर में बँधी रखी है जो पापों की पोटली
गंगा में जाके स्नान कर आया तो क्या हुआ?
भूखे को अपने गेट से तुमने दिया खदेड़
खाए हुए को दूध पिलाया तो क्या हुआ?
आँगन में अपने आन घुसा बाढ़ का पानी
सबकुछ लुटा के बाँध बनाया तो क्या हुआ?
हैं सैकड़ों 'बिल्ला' यहाँ और सैकड़ों 'रंगा'
दो को पकड़ के जेल में लाया तो क्या हुआ?
मिलता न वर्तमान तो दीखे नहीं भविष्य
घुस कोठरी में शोर मचाया तो क्या हुआ?
हालत बिगड़ गई मेरी खेती उजड़ गई
मैं वोट अपनी डाल भी आया तो क्या हुआ?

❑

चल मियाँ

आजकल पड़ता नहीं है कल मियाँ
छोड़ ये दुनिया कहीं अब चल मियाँ!

रात बिजली ने परेशाँ कर दिया
प्रात: धोखा दे गया है नल मियाँ!

लग रही है आग, सोचे जाइए
पास तेरे जल नहीं तो जल मियाँ!

लाख वे उजले बने फिरते रहें
कोठरी में उनकी है काजल मियाँ!

आज ये दल, कल नया, परसों नया
देश अपना बन गया दल-दल मियाँ!

कारनामे कुरसियों के देख लो
बैठते ही हो गए थल-थल मियाँ!

आप पहले बाढ़ तो बुलवाइए
बाद में हम ढूँढ़ लेंगे हल मियाँ!
जेबकतरे हो गए हैं क्या से क्या
किस तरह छलके हैं देखो छल मियाँ!

'इंडियन होटल' का मतलब साफ है
इंडियन यदि आप हो तो टल मियाँ!

दस समोसे खाके वे यह कह गए
आज छोड़ो फिर मिलेंगे कल मियाँ!



❑

क्या हौसला है

देखिए तो वह कविवर चला है
आज दिल्ली तो कल आमला है।

सिर्फ छह सौ ही देने पड़ेंगे
'हिंदी साहित्य' का मामला है।

भाग्य उसको लिये भागता है
व्यर्थ में आपका जी जला है।

आज चप्पल तो कल है टमाटर
सोचिए मंच भी क्या बला है!

छोड़ता ही नहीं है वह माईक
हूट होके भी क्या हौसला है!

गीत उसका गजल बन गया है
सिर्फ मीटर का ही फासला है।

हास्य रस से टपकता करुण रस,
समझिए यह भी उसकी कला है!
हाथ मलते बहुत हमने देखे
पाँव को सिर्फ उसने मला है।

पाठ से पहले दो घूँट दे दो
रम का अभ्यस्त उसका गला है।

आप कहिए तो दर्जन बुला दें
शायरों में भी ठेका चला है।



❑

गरमागरम गजल

है जून का महीना, लूएँ रही हैं चल रे
घर से जरा निकलना पी करके ठंडा जल रे!
दीवार तप रही है, छत भी भभक रही है
बिल्डिंग बनी है चूल्हा, कुनबा रहा उबल रे!



श्यामू स्नानघर में, कब से घुसा हुआ है
चिल्ला रही है चंपा भैया जरा निकल रे!
बाजार में, गली में, हर आदमी है प्यासा
कुछ पूछते हैं प्याऊ, कुछ ढूँढ़ते हैं नल रे!

बच्चे अमीर घर के, जिद पर अड़े हुए हैं
शिमला हो या मसूरी, पापा कहीं तो चल रे!
शरबत हो फालसे का, नींबू की हो शिकंजी
तरबूज के लिए तो, तबीयत रही मचल रे!

कमरे में लीचियों को, दादाजी खा रहे हैं
आओ उन्हें परोसें गरमागरम गजल रे!

❑

क्या कहा

आप हैं आफत, बलाएँ, क्या कहा
आपको हम घर बुलाएँ, क्या कहा?

खा रहे 'धर्मात्मा' ही धर्म को
हम सदा धोखा ही खाएँ, क्या कहा?

ऐसे-वैसे काम सारे वे करें
ऐसी-तैसी हम कराएँ, क्या कहा?

आज महँगाई चढ़ी सौ सीढ़ियाँ
चाँद पर खिचड़ी पकाएँ, क्या कहा?

आप ताजा मौसमी का रस पीएँ
और हम कीमत चुकाएँ, क्या कहा?

आपने पीड़ाओं की सौगात दी
दर्द में भी मुसकराएँ, क्या कहा?

आपके बँगले, भवन, ये कोठियाँ
झोंपड़ी अपनी उठाएँ, क्या कहा?
तुम बहाओ धन को पानी की तरह
हम फकत आँसू बहाएँ, क्या कहा?

बैंड खुशियों का बजा घर आपके
पेट भूखा हम बजाएँ, क्या कहा?

क्यों उड़ाते हो गरीबों का मजाक
हम भी दीवाली मनाएँ, क्या कहा?



❑

उधार मिल जाए

चाहे लंबा, चाहे छोटा उधार मिल जाए
एक सिगरेट का टोटा उधार मिल जाए!

आज लैला मेरी उल्फत की परीक्षा लेगी
काश मजनूँ का मुखौटा उधार मिल जाए!

उनके नखरों से निपट सकते हैं हम भी इक रोज
हमको जो प्यार का 'कोटा' उधार मिल जाए!

माँग में तोड़ के अंबर के सितारे भर दूँ
एक दिन को जो 'डकोटा' उधार मिल जाए!

गीत फिल्मों में तो लिखना बड़ा आसाँ है अगर
बंबई में कोई कोठा उधार मिल जाए!

छापा पड़ते ही बड़े सेठ ने माँगी ये दुआ
आज बापू का लँगोटा उधार मिल जाए!

❑

दीवाना कह रहा है

दीवाना सुन रहा है, दीवाना कह रहा है
दीवानगी को इनकी, मालिक भी सह रहा है।

वचनों का ऊँचा-ऊँचा, पर्वत-सा बन गया है
नारों का गहरा-गहरा, दरिया-सा बह रहा है।

पीड़ा हमारी समझो, ओ सृष्टि के रचयिता
मंदिर तो बन रहे हैं और धर्म ढह रहा है।

नाड़ी में खून मेरा, जमने लगा है यारो
भाई का खून शायद, सड़कों पे बह रहा है।

है बंदिशों की बारिश, हैं अड़चनों के ओले,
लेकिन मेरा इरादा, अपनी जगह रहा है।

❑

देश में कितनी बनेंगी दिल्लियाँ

हाथ में माचिस, जला लो तिल्लियाँ
धर्म-ग्रंथों की उड़ा लो खिल्लियाँ!
सांप्रदायिकता की छत पर बैठकर
फेंकते हो नफरतों की सिल्लियाँ!
छीन के रोटी हमें पीटा गया
आपसे अच्छी हमारी बिल्लियाँ!
राजनीतिक फील्ड में सब माफ है
खेलिए जी भरके डंडे-गिल्लियाँ!
आँख के आँसू हमारी नाक पर
नित उड़ाते जिंदगी की खिल्लियाँ!
आँख फाड़े देखते हम आईना
बहुत गहरी हो गई हैं झिल्लियाँ!
अब गिरेंगी या उड़ेंगी किस तरह?
जेब में अंपायरों की किल्लियाँ।
पक रही ईंटें यहाँ चारों तरफ
देश में कितनी बनेंगी दिल्लियाँ?

❑

लोकतंत्र पर कफन

भारत को अपना कहें सब वतन
आपस में लेकिन जलन-ही-जलन।

नेता के बारे में मत पूछिए
ये तो हैं बस कुरसियों में मगन!

चुनावों में इनको जिता दीजिए
फिर देखते जाओ घोटाले-गबन!

बहारें भी थीं औ' खिले फूल थे
उजड़ता गया ये हमारा चमन।

कारण भी हम सबको मालूम है
घटिया सियासत का बढ़ता चलन।

आतंक, झगड़े, यह नफरत का दौर
कहीं भी नहीं दीखता है अमन।

नेताओं ने कर लिया है फैसला
लोकतंत्र पर डाल देंगे कफन!

❑

हँसते-हँसते ही तोड़ देंगे दम

सिर्फ खुशियों को याद रखना तुम
भूल जाना जो भी सहे हों गम!

इस बुढ़ापे का मजा क्या कहिए
असली जीवन ही जी रहे हैं हम!

जिंदगी भर हँसे, हँसाते रहे
हँसते-हँसते ही तोड़ देंगे दम।

गीत नफरत के कभी गाए नहीं
हर समय छेड़ी प्यार की सरगम।

कोई आशा न रखी लेखन से
आत्म-संतोष के लिए थी कलम।

सिर्फ अपनों की बात क्यों करिए
याद गैरों को भी आएँगे हम।

जख्म गैरों ने तो दिए थे मगर
उन पे भारी ही थे अपनों के सितम।
कष्ट तो बहुत मिले हमको मगर
कर गए दूर, सुखों के मौसम।

जिनमें सहने की हो हिम्मत उनके
दु:ख के तूफान भी जाते हैं थम।

धर्म की बात जो भी करते हैं
उनके कामों को देख आँख हैं नम।

जिनके हाथों को कोई काम न हो
वे तो पत्थर ही उठाएँगे या बम।



❑

व्यंग्य-लेख

नीम का पेड़

दिन के ग्यारह बजे हैं और बाबूलालजी अपनी ग्यारह नंबर बस यानी दोनों टाँगों पर सवार मंद गति से अपने कार्यालय की ओर जा रहे हैं। शायद दफ्तर पहुँचने की उन्हें कोई जल्दी नहीं है। तभी अचानक रेडियो पर एक फिल्मी गीत बज उठता है—

'इतनी जल्दी क्या है गोरी साजन के घर जाने की।'

गीत की इस पंक्ति को सुनते ही बाबूलालजी के मस्तिष्क में एक हलचल सी मच जाती है। विचारों में डूबे वे इस पंक्ति के रचयिता की मन-ही-मन प्रशंसा करने लगते हैं—

कितनी सही और अर्थपूर्ण पंक्ति है यह! साजन का ही तो घर है! घर कहीं भागा थोड़े ही जा रहा है? भला वहाँ पहुँचने के लिए गोरी जल्दी करे भी क्यों? ससुराल में पहुँचकर उस पगली को काम और झिड़कियों के अतिरिक्त मिलेगा भी क्या?

बाबू बाबूलालजी का चिंतन-क्रम चालू रहता है—

''वास्तव में सजनी के साजन और बाबू के बॉस के बीच कोई विशेष अंतर नहीं है। सजनी की स्थिति जैसी ससुराल में है कुछ वैसी ही हालत बेचारे बाबू की दफ्तर में है। साजन अपनी सजनी के कैरेक्टर पर यदि खास निगाह रखता है, तो बॉस अपने बाबू के कैरेक्टर-रोल पर। साजन अपनी सजनी से कभी-कभार नाराज हो बैठता है, उसे डाँट-फटकार भी देता है, काम गलत हो जाने पर उससे स्पष्टीकरण भी माँग लेता है, लेकिन ऐसा अवसर भी आता है जब वह अपना पूरा स्नेह तथा प्यार अपनी सजनी के लिए उड़ेलता हुआ कहता है—

'प्रिय, घर का काम हो या न हो, तुम चिंता मत करो। जब तक मैं हूँ, तुम्हारा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। बस मेरी सेवा करती रहो।'

यह सुनते ही सजनी श्रद्धा में डूबकर तुरंत अपने साजन के चरण-कमलों में लोट जाती है।

बॉस भी अपने बाबू से कुछ इसी प्रकार कहता है—

'बेटे, दफ्तर का काम हो या न हो, तुम घबराओ मत। जब तक मैं यहाँ हूँ, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बस, मेरे चमचे बने रहो।'

इतना सुनते ही बाबू अपने बॉस के पाँव पकड़ लेता है।

दफ्तर और ससुराल में तुलना करते हुए श्री बाबूलालजी बारह बजे के लगभग अपने कार्यालय में प्रवेश करते हैं। इस सरकारी कार्यालय में कार्यरत उन्हें पूरे पच्चीस वर्ष हो गए हैं। आम भारतीय घरानों में जिस प्रकार बड़ी अम्मा, बड़ी दीदी और बड़े भाई की पूछ होती है, ठीक उसी प्रकार का आदर-सम्मान बाबू बाबूलालजी को अपने कार्यालय में प्राप्त है। सभी कर्मचारी उन्हें 'बड़े बाबू' कहकर पुकारते हैं।

बड़े बाबू के कमरे में घुसते ही चारों ओर चुप्पी सी छा गई। गप्पबाजी और हँसने की आवाजें एकदम बंद हो गईं। क्योंकि कर्मचारियों को यह अच्छी तरह मालूम है कि 'बड़े बाबू' को हँसना और शोर-शराबा कतई पसंद नहीं।

उदास आकृतिवाले बाबू बाबूलालजी को आज तक किसी ने मुसकराते हुए नहीं देखा। महँगाई भत्ता बढ़े, ग्रेड रिवाइज हो, वे कभी प्रसन्न नहीं होते। कारण पूछने पर उन्होंने एक बार अपने नए चमचे को बताया था—

'बेटे, हँसनेवाले को इस दुनिया ने कभी कुछ नहीं दिया, पैदा होते ही रोकर मैंने अपनी माताजी की सहानुभूति

प्राप्त की थी। मेरा रोना-चिल्लाना सुनकर उसने मुझे गोद में उठा लिया था और दूध पिलाया था। उस समय यदि मैं हँसता तो मेरी माँ मुझे भूखा छोड़कर बाथरूम में घुस जाती। चमचे, मैंने उसी समय यह महत्त्वपूर्ण निर्णय ले लिया था कि मैं अपना सारा जीवन हँसी-मजाक में नहीं बल्कि रो-रोकर बिताऊँगा।

'जब मैंने प्रथम कक्षा में प्रवेश लिया, तब भी मैं रोता हुआ ही विद्यालय गया था। हाईस्कूल की परीक्षा भी मैंने रो-रोकर पास की। इंटरव्यू में बोर्ड के सदस्यों के सामने अगर मैं गिड़गिड़ाता नहीं तो चेले, यह क्लर्की भी हाथ से निकल गई होती।

'दफ्तर की वह घटना तो तुम्हें याद होनी चाहिए, जब मैंने 'काम ज्यादा है' का दुखड़ा रो-रोकर अपनी सहायतार्थ नौ नए बाबुओं की नियुक्ति करवाई थी और उनमें से तुम भी एक हो।'

चेले की आँखों में आँसू देखकर बड़े बाबू बोलते चले गए—

'रोओ बेटा, जी भरकर रोओ! लोग सदा मुसकराते हुए फूल को ही तोड़ते हैं। हँसनेवाला यहाँ बेमौत मारा जाता है। रोनेवाला लोगों की सहानुभूति प्राप्त करके कुछ-न-कुछ ले ही बैठता है। सुग्रीव रामचंद्रजी के पास आकर रोया था, तो उसे पूरी सहायता मिली। श्री रामचंद्रजी ने बाली को मार डाला। राजा रावण हनुमानजी को देखकर हँसा था, तो मारा गया। तो चमचे, हँसना छोड़कर रोने का अभ्यास करो। आज इस कुरसी के लिए रोओ, तो कल उस सीट के लिए चिल्लाओ। अगले दिन ओवर टाइम की खातिर गिड़गिड़ाओ, तो उससे अगले दिन महँगाई भत्ते की खातिर 'हाय-हाय' करो। बस जीवन भर रोते रहो, तुम्हारा कल्याण होगा।

कुरसी पर बैठते ही बाबूलालजी ने उपस्थिति-पंजिका पर दस बजे की हाजिरी लगाई और एक बार फिर चिंताग्रस्त हो गए। वे बाबू और फाइल के संबंधों के विषय में सोचने लगे—

बाबू को जितना प्यार अपनी पत्नी से, उतना ही प्रेम उसे अपनी फाइल से होता है। घर में यदि वह बीवी का पेट पालता है, तो दफ्तर में उसे फाइल का पेट भरना पड़ता है। घर में पत्नी और दफ्तर में फाइल उसका स्वागत करती है। बाबू दोनों को बाहर की हवा तक नहीं लगने देना चाहता।

बाबू के घर लौटते ही उसकी बीवी सुबक-सुबककर रोती हुई कहती है—'प्राणनाथ, आप आ गए। भला ऐसी भी क्या नाराजगी मुझसे? दफ्तर तो पाँच बजे ही बंद हो गया होगा, यह दो घंटे की देरी क्यों? आपकी प्रतीक्षा करते-करते देखो ये मेरे साड़ी-ब्लाउज फट गए हैं।'

इतना सुनकर बेचारे बाबू की आँखों से आँसू बह निकलते हैं। वह अपनी बीवी को धीरे बोलने की सलाह देकर अपने पास बिठा लेता है। सिर सहलाते हुए दो-चार बिगड़े बालों को ठीक करता है। नए साड़ी-ब्लाउज देते हुए पत्नी से कहता है—

'लो पहनो, इन्हें पहनकर तुम बहुत अच्छी लगोगी। ओवरटाइम मिला था तो लेता आया। आज तुम्हारा भाई तुम्हें लेने के लिए आनेवाला है। मायके हो आओ। लेकिन जल्दी ही लौट आना प्रिय! मैं तुम्हारे बिना भला अकेला कैसे दिन काटूँगा? और हाँ, लाओ तुम्हारे बालों में यह गुलाब का फूल तो लगा दूँ। इससे तुम्हारी सुंदरता में निखार आ जाएगा और मायके में अधिक सम्मान मिलेगा।'

दूसरी ओर दफ्तर में भी कुछ इसी प्रकार का दृश्य देखने को मिलता है। बाबू के सीट पर पहुँचते ही फाइल रानी अपने दिल का दर्द बताती है—

'हे मेरे मालिक! तुम आ गए। दफ्तर तो दस बजे ही खुल गया। विरह के ये दो घंटे मुझ से सहन नहीं होते। देखो, तुम्हारा इंतजार करते-करते मेरा यह कवर भी फट गया है।'

इतना सुनते ही बाबू गहरी चिंता में डूब जाता है। धीरे बोलने की सलाह देते हुए फाइल को समझाता है कि वह

दूसरों को यही बताया करे कि वह दस बजे से ही उसकी गोद में बैठी है। समझाने के पश्चात् वह फाइल को अपने हाथों में उठा लेता है, गर्द झाड़ता है और कुछ बेतरतीब कागजों को ठीक करता है। नया कवर चढ़ाते हुए फाइल से कहता है—'लो, इस कवर में तुम बहुत अच्छी लगोगी। आज टाइम मिला तो ऐसा कर रहा हूँ। बॉस ने आज तुम्हें माँगा है। चली जाओ लेकिन जल्दी ही लौट आना, प्रिय। अरे हाँ, यह 'अरजेंट-स्लिप' तो लगा दूँ, जिससे तुम्हारा महत्त्व और बढ़ जाएगा।'

सोचने का सिलसिला जारी था कि अचानक एक नए बाबू ने आकर बड़े बाबू के विचारों का क्रम तोड़ दिया—'यह अमुक केस है, सर! आप जैसा कहें वैसा नोट दे दूँ?' बड़े बाबू ने छोटे बाबू को डाँटा—'पगला कहीं का! अरे तू नोट तो तब ही देगा जब नोट प्राप्त कर लेगा। पहले ले, फिर दे।'

चेला चलने लगा तो बड़े बाबू ने उसे रोककर आदेश दिया—'जा बेटा, मेरे अधीन सभी बाबुओं को मेरी मेज के सामने इकट्ठा कर ले। लंच का समय अभी से समझ ले। मैं तुम लोगों को कुछ आवश्यक उपदेश देना चाहता हूँ।'

नया बाबू तुरंत गया और थोड़ी देर में सारे-के-सारे चमचे बड़े बाबू की मेज के इर्द-गिर्द जमा हो गए। बड़े बाबू ने बोलना आरंभ किया—

'आज जब मैं घर से दफ्तर की ओर चला आ रहा था तो रेडियो से एक फिल्मी गीत बजा—'इतनी जल्दी क्या है गोरी साजन के घर जाने की?' बहुत पसंद आने पर मैंने इस पंक्ति को जरा बदल दिया है—'इतनी जल्दी क्या है बाबू फाइल को निबटाने की?' कहो कैसी लगी?

'बहुत बढ़िया सर! वाह-वाह!' चेले चहके।

बड़े बाबू अब चमचों को समझाने के मूड में आ गए—'रिश्वत लेने-देने में कोई बुराई नहीं है, बेटो! कर्मों का फल अवश्य मिलता है। किसी का कोई कार्य करने पर यदि बदले में तुम्हें कुछ मिल जाए तो क्या बुरा है? मेरा काम पड़ा तो मैं बॉस के पास गया। उन्होंने मेरा काम कर दिया। मैंने उनके घर फलों की टोकरी पहुँचा दी। काम भी हो गया और काम करनेवाले को फल भी मिल गया। दोनों संतुष्ट। चेलो, अगर तुम किसी का कोई काम करते हो, अलमारी खोलते हो, फाइल निकालते हो, पेपर पर कुछ लिखकर केस को आगे बढ़ाते हो, तो तुम्हें इसके बदले में कुछ-न-कुछ तो प्राप्त होना ही चाहिए। 'नोट' लेकर ही नोट देना चाहिए। यह है काम करके फल प्राप्त करने की नीति, जिसे मूर्ख लोग रिश्वत का नाम देकर बुरा बताते हैं। इंग्लैंड का प्रथम प्रधानमंत्री श्री वालपोल कहा करता था—'एवरी मैन हैज हिज प्राइस।' तो मैं चमचो! तुम्हें उसके कथन का सम्मान करने की सलाह देता हूँ।'

'श्री वालपोल की यह नीति अपनाकर हम बदनाम हो जाएँगे, सर!' एक चेले ने बड़े बाबू को टोका।

'काम धीरे-धीरे करने से लोग हमें अकड़ूँ और स्वार्थी कहेंगे, सर!' दूसरा चमचा बोला।

बड़े बाबू अपने चमचों को समझाने लगे—'रही अकड़पन की बात, तो इसे भी मैं बुरा नहीं मानता। अकड़ना प्रकृति की देन है। यह हमें विरासत में मिला है। आप सभी जानते हैं कि हम सूर्य के बेटे हैं। जब हमारा बाप अकड़ा हुआ है तो हम क्यों नहीं अकड़ें? सूर्य की अकड़ अटल है, तो पृथ्वी रोशनी की खातिर उसके चक्कर काटती रहती है। कुआँ अपने स्थान पर ही रहकर दूसरों की प्यास बुझाता है। वह पानी लेकर कहीं नहीं जाता। तो बेटो, जिन लोगों को आवश्यकता है, अपना काम करवाना है, उन्हें दफ्तर के चक्कर काटने ही होंगे।'

तीसरी बात तुमने स्वार्थी होने की कही है। समझो बेटा, प्रकृति ने हमें जन्म से ही स्वार्थी बनाया है। हमें पैदा करने में स्वयं भगवान् का भी स्वार्थ था कि हम बड़े होकर उसका गुणगान करेंगे। संतान उत्पत्ति में माता-पिता का स्वार्थ नहीं तो क्या है? उदाहरण देकर और स्पष्ट करता हूँ, जरा ध्यान से सुनो।

'जी सर!' छोटे बाबुओं की एक साथ आवाज आई।

बड़े बाबू ने पूछा, 'नीम का वृक्ष तो आप लोगों ने देखा ही होगा?'

'देखा है, सर!' सभी चमचों ने स्वीकार किया। बड़े बाबू फिर चालू हो गए—

'मेरे में और नीम के वृक्ष में कोई खास फर्क नहीं है। वह अकड़ा हुआ खड़ा है तो मैं भी अपनी सीट पर अकड़ा हुआ बैठा हूँ। स्वभाव से हम दोनों कड़वे हैं। लेकिन जैसे नीम का कड़वापन गुणकारी होता है, वैसे ही मेरी कड़वी बातें आप लोगों को लाभ ही पहुँचाती हैं। नीम के साए में विश्राम करके मनुष्य आनंद प्राप्त करता है, तो मेरे अधीन काम करनेवाला बाबू आनंदपूर्वक ही अपनी नौकरी बजाता है। वृक्ष धूप से बचाता है, तो मैं आपको 'एक्सप्लेनेशन' से बचाता हूँ। वहाँ चित्त प्रसन्न करने के लिए हवा का झोंका है, यहाँ ओवरटाइम है। क्यों ठीक है न?'

सभी बाबुओं ने 'हाँ सर' कहकर समर्थन किया और बड़े बाबू बोलते रहे—'नीम का वृक्ष और मैं, दोनों स्वार्थी भी हैं। वह पौधे से बढ़ता-बढ़ता एक दिन पूरा वृक्ष बना, तो मैं भी आज छोटे बाबू से बड़ा हो गया हूँ। मेरा स्वार्थ किसी छोटे बाबू को ऊपर नहीं आने देना चाहता, क्योंकि नीम का वृक्ष भी किसी अन्य छोटे पौधे को अपने नीचे पनपने नहीं देता।'

बड़ा बाबू होने के नाते बॉस से संपर्क बनाए रखना मेरा ही अधिकार है। तुम्हारा उनसे मिलना-जुलना मुझसे सहन नहीं होगा। यह मेरा स्वार्थ ही है, जो तुम्हें बॉस के नजदीक जाने से रोकता है। चंद्रमा पृथ्वी का भाई है, फिर भी पृथ्वी उसे सूर्य के निकट नहीं जाने देती, बीच में आ जाती है। पृथ्वी यदि सूर्य के चक्कर काटती है तो वह चंद्र को अपने चक्कर कटवाने पर मजबूर कर देती है। पृथ्वी सूर्य की चमचागिरी करती है तो चंद्रमा पृथ्वी की। ठीक इसी प्रकार मैं बॉस की चमचागिरी करता हूँ, तो तुम लोगों को चाहिए कि तुम सब मेरे चमचे बने रहो। इसी में हम सबकी भलाई है। भगवान् जैसे अपने भक्तों का कल्याण करता है वैसे ही मैं अपने चमचों पर संकट आने पर केवल उन्हीं को बचाता हूँ।'

'धन्य हो बड़े बाबू!' इस बार सिर्फ एक चमचा बोला।

'सर, चार बज गए हैं, चाय भी तो पीनी है।' दूसरे चमचे ने बड़े बाबू को याद दिलाया। बड़े बाबू बोले, 'बिलकुल, सही कहा तुमने। आज की चाय तुम्हारी ही तरफ से होगी।' बड़े बाबू के इस सुझाव को आदेश मानकर सभी बाबू ऑफिस-कैंटीन की ओर चल पड़े।



❑

राजनीति बनाम भैंसनीति

सपने सभी लोग देखते हैं। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार जो हुआ। मैंने भी कल रात एक सपना देखा। देश की राजनीतिक अवस्था के विषय में सोचता-सोचता मैं सो गया और पहुँच गया उत्तर प्रदेश के एक गाँव में। मैंने देखा कि एक ओर नेताओं का जमघट दूसरी ओर जनता की भीड़ और भैंसों का झुंड, जो अपनी-अपनी दशा पर विचार-विमर्श कर रहा है। 1947 में भी मैंने एक सपना देखा था, लेकिन कलवाला सपना उससे बिलकुल भिन्न है।

मैंने देखा कि राजनीतिक क्षेत्र में इस गाँव ने अद्वितीय प्रगति की है। सन् '47 में गाँववालों को यदि एक ही दल की जानकारी थी तो अब वे लगभग दस दलों के दलदल में फँस गए हैं। उस समय यदि एक भी नेता नहीं था तो इस समय इनकी गिनती करने में मुझे कठिनाई अनुभव हुई। संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि 1947 से 1974 तक पहुँचने में जिस प्रकार 4 और 7 के अंकों की स्थिति बदली है, ठीक उसी तरह इस गाँव की राजनीतिक अवस्था भी उलट-पुलट सी हो गई है।

एक मामूली सा कार्यकर्ता भी अपने को 'नेताजी' कहलवाने में सम्मानित समझता है। 'नेताजी' पुकारते ही वह रुक जाता है और हाथ जोड़कर मुसकराने लगता है। गरदन अकड़ाते हुए वह कहता है—'कोई सेवा मेरे लिए?'

'मेहरबानी है आपकी, आपकी कृपा से साँस आ रही है।' गाँव का भोला-भाला आदमी श्रद्धा में डूबकर बोलता है।

'नहीं-नहीं, मैं क्या चीज हूँ।' नेताजी मन से कहते हैं। लेकिन गाँव का आदमी अपने मन की बताता है—'नहीं साहब, आप हमारे लिए सबकुछ हैं। चीनी, चावल, घी, तेल सभी चीजें तो उपलब्ध करा दी हैं हमारे लिए। हमें और क्या चाहिए?' गैस के सिलंडरों की ओर वह आदमी इशारा करते हुए नेताजी से पूछता है—'ये क्या हैं जी? ये हमारे किस काम आएँगी?' नेताजी उसे समझाते हैं—'आएँगी नहीं, आएँगे। ये गैस के सिलेंडर हैं। इन्हें प्रत्येक घर में बाँटने का हमारे दल का कार्यक्रम है। चुनाव में जीतने के बाद हम गैस का एक-एक चूल्हा भी देने का वचन देते हैं। वोट हमारे ही दल को देना वरना पछताओगे।'

'बहुत अच्छा साहब', आदमी मगन मुद्रा में बोलता है। नेताजी इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की क्षेम-कुशल पूछता हुआ आगे बढ़ रहा है। तभी अचानक 'जिंदाबाद-मुरदाबाद', 'हम ये करेंगे, वो करेंगे', 'हम गाँव को यहाँ से वहाँ ले जाएँगे' जैसे नारे मेरे कानों में पड़े। ये नारे गाँव की भैंसों ने भी सुने। नेताओं के इन नारों को सुनकर भैंसों ने सींग हिलाए, एक-दूसरी पर कीचड़ उछाली और नारे लगाए—'हम भी गाँव में रहती हैं, हमें भी जीने का अधिकार है। हमसे पूछे बिना नेताओं को कोई अधिकार नहीं कि वे गाँव को यहाँ से उठाकर कहीं ले जाएँ।'

भैंसों ने चेतावनी दी—'कभी राजनीति के एक बहुत बड़े माहिर ने 'पोलिटिक्स इज डर्टी गेम' हमसे ही प्रेरणा लेकर कहा था। अब हम जाग गई हैं। समय आ गया है कि नेताओं को अब हमारी माँगें स्वीकार करनी होंगी।'

भैंसों ने अपनी तीन माँगें रखीं—1. हमें भी गाँव की जनता में शामिल किया जाए, 2. हमें वोट का अधिकार प्राप्त हो तथा 3. हमें चुनाव में खड़े होने का अधिकार मिले। भैंसों की इन तीनों माँगों को लेकर नेताओं और जनता में विचार-विमर्श होने लगा। जनता ने पहली माँग के समर्थन में कहा, 'हममें और भैंसों में कोई विशेष अंतर नहीं है। अगर हमारे आर्थिक सहयोग से गाँव बना है तो भैंसों के दूध से हमारा स्वास्थ्य। इन्हें गाँव की जनता में तुरंत शामिल कर लेना चाहिए। चमड़ी दोनों की उधड़नी है। फिर भैंसों की चमड़ी तो किसी-न-किसी काम भी आ जाएगी।'

नेताओं ने भी हाँ-में-हाँ मिलाई। कहा, 'भैंसें भी जनता की तरह भोली होती हैं। हम जनता और भैंस दोनों को हाँक

सकते हैं।'

भैंसों की दूसरी माँग के विषय में गाँव की जनता बोली, 'हमारे गाँव में जब इतनी राजनीतिक चेतना आई है तब भैंसों को गाँव की राजनीति से अलग रखना उचित नहीं है। वोट का अधिकार इन्हें प्राप्त होना ही चाहिए। बेचारी भैंसों ने गाँव का क्या बिगाड़ा है जो इन्हें इस राजनीति अधिकार से वंचित रखा जाए? हमें किसी-न-किसी को तो अपना वोट देना ही है। भैंसें भी किसी-न-किसी को अपना वोट देंगी। फर्क क्या पड़ता है?'

नेताओं ने भी जनता के स्वर-में-स्वर मिलाया। कहा कि जैसे हमने जनता को खूँटे से बाँध लिया है, वैसे ही भैंसों को भी बाँध लेंगे।

तीसरी माँग के बारे में भी जनता ने भैंसों का साथ दिया। 'वोट देने का अधिकार चुनाव में खड़े होने के अधिकार से जुड़ा हुआ है। भैंसों को भी चुनाव में खड़ा होने दिया जाए। इनके द्‌वारा गाँव के प्रशासन में भाग लेना राजनीतिक क्षेत्र में एक उल्लेखनीय कदम होगा। विश्व के सामने यह एक नई चीज होगी। हमारे निर्णय से संयुक्त राष्ट्र संघ में तहलका मच जाएगा। भैंसों को चुनाव में खड़ा करने की हमारी पहल विश्व के इतिहास में 'स्वर्ण अक्षरों' में लिखी जाएगी।'

लेकिन नेताओं ने इस तीसरी माँग का विरोध किया—'भैंसें गंदी होती हैं। ये एक-दूसरे पर कीचड़ उछालती हैं।' काफी कहा-सुनी के बाद जनता ने नेताओं की बात मान ली। नेताओं ने आश्वासन दिया कि वे निकट भविष्य में भैंसों की इस तीसरी माँग पर पुन: विचार करेंगे। बेचारी जनता और भैंसें नेताओं के आश्वासन के चक्कर में आ गईं और पोलिंग बूथ की ओर अपना कीमती वोट डालने बढ़ने लगीं। भैंसों ने अपने-अपने सींगों में भिन्न-भिन्न दलों के झंडे फँसा लिये। नेता उन्हें हाँक रहे थे और वे गीत गाती हुई मस्ती में चल रही थीं। शायद उन्हें भी ठर्रा पिला दिया गया था, तभी एक भैंस वोटर को लेकर नेताओं में झगड़ा आरंभ हो गया, क्योंकि सभी दलों के नेता उस भैंस को अपना-अपना वोटर मान रहे थे। उस भैंस का दुर्भाग्य था कि उसने किसी भी राजनीतिक दल का झंडा नहीं उठाया था। दलों में झगड़ा होने लगा। झंडे और लाठियाँ चलने लगीं। पता नहीं मैं बीच-बचाव कराने वहाँ क्यों और कैसे पहुँच गया? तभी अचानक लट्‌ठ मेरे सिर पर पड़ा और मेरी आँख खुल गई। मैं मरने से बच गया था, यही बहुत था।



❑

हट्टे-कट्टे ये तिलचट्टे

जीव विज्ञान में रुचि होने के कारण तिलचट्टों को मैंने हमेशा बारीक नजर से देखा है। तिलचट्टा एक सर्वाहारी जीव है, जो दिन में छिपा रहता है और रात होने पर ही अपने शिकार के लिए निकलता है।

तिलचट्टों जैसे गुणोंवाले अनेक लोग हमें अपने समाज में भी उपलब्ध हो सकते हैं। ये लोग एक विशेष पाचनशक्ति रखते हैं और समाज का सबकुछ चट करने में सक्षम हैं। तिलचट्टों की तरह ये लोग भी अनेक सामाजिक बीमारियों के कीटाणु लिये चारों ओर घूमते-फिरते देखे जा सकते हैं। आवश्यक कार्य प्राय: रात में ही निबटाए जाते हैं। तिलचट्टों के शरीर की रक्षा हेतु उसको यदि बाहर कवच प्राप्त है तो मानव-तिलचट्टे भी अपने लिए एक-दो बंदूकधारियों या दो-चार गुंडों या पाँच-सात चमचों से बाहरी कवच का काम लेते हैं।

घरों में बसनेवाले तिलचट्टों का वर्गीकरण मैंने तीन प्रकार से किया है—1. किचन कॉक्रोच, 2. बाथरूम कॉक्रोच, 3. बेडरूम कॉक्रोच। अपने-अपने क्षेत्रों में रगड़ा लगाते हुए वे एक-दूसरे के क्षेत्रों में भी घुसपैठ करते रहते हैं। घरवाले दु:खी हों तो हों, परेशान रहें तो रहें, इन्हें कोई मतलब नहीं। आदमी इनकी गतिविधियाँ देखकर इन्हें पीटता है, मारता है परंतु दूसरी ही रात ये दुगुनी संख्या में प्रकट हो अपने जिंदा रहने का सबूत देते रहते हैं।

मानव तिलचट्टे भी तीन प्रकार के होते हैं—1. सामाजिक, 2. राजनीतिक, 3. साहित्यिक। ये तिलचट्टे भी अपने-अपने क्षेत्र को अपवित्र और भ्रष्ट करते हुए एक-दूसरे के इलाके में पूरा दखल फरमाते हैं।

कॉक्रोच बिरादरी ने बेडरूम कॉक्रोच को श्रेष्ठ माना है; क्योंकि वह घरवालों की सारी अच्छी-बुरी हरकतों से वाकिफ होता है। वह मालिक के सारे रहस्य जानता है—डायरी सूँघना, बिस्तरे को चाटना, गुप्त बातें सुनना, ये उसकी विशेष गुस्ताखियाँ हैं।

एक बार नाली बंद होने के कारण हमारे घर के किचन और बाथरूम में पानी भर गया था। बेडरूम तिलचट्टे को छोड़कर सभी तिलचट्टे तिलमिला उठे थे। वह दीवार पर चढ़ा सारा नजारा देखता रहा था। पानी निकलने और सूखने के बाद ही वह बोला था—'भाइयो, यह मत समझना कि मैंने तुम्हारे लिए कुछ नहीं किया है। मैंने ऊपर जाकर तुम्हारे दु:ख को देखा है, अनुभव किया है। यह पानी मैंने ही तो निकलवाया है।'

घर के बेडरूम-कॉक्रोच की भाँति हमारे समाज में राजनीतिक तिलचट्टों को अधिक सम्मान प्राप्त है। यह तिलचट्टा ज्यादातर बड़े-बड़े राजनेताओं और मंत्रियों की कोठियों में आता-जाता रहता है। देश आजकल कहाँ खड़ा है? इसे यहाँ से वहाँ ले जाने में सरकार की कौन सी योजना काम करेगी? इसी प्रकार के सभी प्रश्नों के उत्तर उसके पास होते हैं। बजट कैसा रहेगा? कौन वस्तु महँगी होगी, कौन सी सस्ती? यह सबकुछ उसे मालूम होता है और इस जानकारी का लाभ वह अपनी पूरी बिरादरी को दिलवाता है।

राजनीतिक तिलचट्टा मंत्रीजी की अलमारी और मेज के ड्राअर में घुसकर गुप्त फाइलों को सूँघ आता है। मंत्रीजी भी उसे नहीं टोकते।

इन राजनीतिक तिलचट्टों की बिरादरी का विस्तार विदेशों तक होता है। इसी कारण इन तिलचट्टों के पर भी निकल आते हैं और मंत्रीजी के साथ ये विदेश यात्रा कर आते हैं। अन्य प्रकार के तिलचट्टों की अपेक्षा यह गहरा लाल और मोटी गरदनवाला होता है। संकट आने पर सरकारी संरक्षण भी इसे प्राप्त हो जाता है।

राजनीतिक तिलचट्टों का आशीर्वाद लेकर सामाजिक एवं साहित्यिक तिलचट्टे भी अपने-अपने क्षेत्रों में आतंक फैलाए रखते हैं। सामाजिक तिलचट्टे की अपेक्षा साहित्यिक तिलचट्टा जरा कम खतरनाक होता है। लोग इनसे बचने के उपाय ढूँढ़ते रहते हैं, परंतु सफल नहीं होते।

साहित्यिक तिलचट्टा थोड़ा निडर होता है, वह राजनीतिक तिलचट्टे की परवाह कुछ कम करता है, क्योंकि वह मंत्री से अपना सीधा संपर्क बनाए रखता है। वह मंत्रीजी और उनके कार्यों की तारीफ में दो-चार पंक्तियाँ लिख डालता है और मंत्रीजी भी बदला चुकाने की भावना से अपने भाषण में दो-चार शब्द उसकी प्रशंसा में बोल जाते हैं। पुरस्कार के लिए 'हाँ' होने पर मंत्रीजी पर पूरी पुस्तक भी लिख दी जाती है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के कार्यों से संतुष्ट बने रहते हैं।

एक साहित्यिक तिलचट्टे से मेरा भी वास्ता पड़ा है। मैं उसकी रचनाओं की कभी सराहना नहीं कर सका। इसलिए वह जीवन भर मुझसे नाराज रहा। अपनी अंतिम साँसों में भी उसने मुझे दर्जनों गालियाँ भेंट की थीं और कहा था—'अगले जन्म में निबटूँगा' ।

साहित्यकार मर गया, लेकिन मर के भी उसने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। एक रात वह बेडरूम तिलचट्टा बनकर मेरे घर में पैदा हो गया। ठीक बारह बजे वह मेरे कान को तलाशता हुआ मेरे बिस्तर पर आया और बड़ी तीव्र गति से मेरे बाएँ कान में प्रवेश कर गया। मैं उठ बैठा, मेरी चीख निकल गई। तिलचट्टा बोला, 'चिल्लाओ मत, चुपचाप सुनो, मैं तुम्हारे कान के अंदर से ही बोल रहा हूँ।' परिचय पूछने पर उसने बताया—'वही साहित्यिक तिलचट्टा, तुम्हारा परिचित दुश्मन, जिसे सराहना तो दूर, सुनने तक का कष्ट नहीं उठाया तुमने। आज मुझे अवसर मिला है। अपनी सारी रचनाएँ तुम्हारे कान में पेलूँगा, तुम्हें सुननी ही पड़ेंगी।' इतना कहकर मेरे कान के परदे को उसने माइक की तरह पकड़ लिया। पुन: मेरी चीख निकल गई। उसने मुझे चेतावनी देते हुए समझाया—'चुपचाप सुनो वरना तुम्हारे कान के परदे को फाड़कर तुम्हारे मस्तिष्क में घुस जाऊँगा और वहाँ पहुँचकर सबकुछ उगल दूँगा।'

मैं गिड़गिड़ाया—'भाई मेरे, बाहर आ जाओ, मैं तुम्हारी एक नहीं, दस रचनाएँ सुनने का वचन देता हूँ।'

वह बोला—'बस, रहने दो। ऐसे वायदे तो पिछले जन्म में भी कई बार किए थे तुमने, लेकिन निभाए कभी नहीं। मंच पर नहीं सुना तो सुनने के लिए घर पर भी बुलाया था, मुझे वहाँ भी कब सुना तुमने? आज तो तुम मेरे काबू में हो। सुनो, दस वर्ष पुरानी एक नई रचना।' मैंने उसका मतलब पूछा तो समझाया—'रचना जब तक सुनी नहीं जाती, नई ही रहती है, ध्यान से सुनो। शीर्षक है—'कुछ नहीं दिखता'।

मैंने कहा, 'भैया, बाहर आ जाओ, सबकुछ दिखने लगेगा।' उसने मुझे पुन: धमकाया—'खामोश!' इस कविता में मुझे बाहर आकर भी नहीं दिखेगा।'

मैंने पूछा, 'नए-पुराने ये राजनीतिक दाँव, कुरसी के लिए काँव-काँव, आतंकवाद का फैलाव, गुंडागर्दी द्वारा शराफत का घेराव, बेईमानी और भ्रष्टाचार के ये गहरे घाव, बाढ़ में डूबती हुई गरीबी की नाव, गैस का रिसाव, शरणार्थियों का जमाव, देशी जिंदगी पर विदेशी प्रभाव, दो देशों में झगड़ा कराके बड़े राष्ट्रों द्वारा बीच-बचाव, गरीबी पर अमीरी का दवाब, बढ़ते हुए भाव और तसल्ली के लिए चुनाव, कुछ भी नहीं दिखाई देता तुम्हें?'

वह गुस्से में बोला, 'हाँ, मेरी रचना की यही विशेषता है। दिखाई देते हुए भी कुछ न दिखना, सुनाई देते हुए भी कुछ न सुनना। यदि मैं कहूँ कि जो कुछ तुमने कहा, मुझे नहीं सुना तो मेरा क्या कर लोगे?'

मैंने कहा, 'ये सरासर धोखा है, रचना का शीर्षक बदलो।'

'नहीं बदलता', कहकर उसने मेरे कान के परदे को माईक की तरह जोर से हिलाया और अपनी रचना 'कुछ दिखाई नहीं देता' पढ़ना आरंभ किया। मैं बेहोश हो चुका था। पता नहीं वह कब तक अपनी रचना सुनाता रहा। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है कि इस बार भी मैं उसकी रचना नहीं सुन सका। होश में आ जाने पर मैंने अपने आपको अस्पताल में पाया। डॉक्टर साहब तिलचट्टे को पकड़े उसे घूरे जा रहे थे। शायद वे उससे पूछ रहे थे—'बोल तेरे साथ क्या सलूक किया जाए?'

मैं बोला, 'डॉक्टर साहब, इसे मारना मत। इसे अस्पताल की किसी गंदी नाली में फेंक दीजिए, ताकि यह अपनी बिरादरी के जीवों को अपनी कहानी सुना सके।'



❑

मोहल्ले का कस्टमर

हर मोहल्ले की तरह हमारे मोहल्ले में भी एक राशन की दुकान है, आपके मोहल्ले में भी होगी। हमने यहाँ पर दो-दो फर्लांग लंबी लाईन देखी है, आपने शायद इससे भी लंबी लाइनें देखी हों। लेकिन हमारे मोहल्ले का ग्राहक आपके मोहल्ले के ग्राहक से बिलकुल भिन्न है। हमारे मोहल्ले का 'कस्टमर' कष्ट में नहीं मरता। वह मुसकराता हुआ मरता है।

हमारे मोहल्ले के लोगों ने जीवन को बहार मानकर भोगा है। राशन की कतारों में ऐसे जमे रहे हैं, मानो पिकनिक मनाने आए हों। राशन मिलेगा या नहीं, इसकी चिंता इन्होंने कभी नहीं की। सरकार से शिकायत करना या उसे कोसना इन लोगों को आज तक नहीं आया। बड़े मस्त जीव हैं हमारे मोहल्लेवाले। राशन मिल जाए तो अच्छा, नहीं मिले तो भी अच्छा। घर में चीनी और घी है तो ठीक है, नहीं है तो भी ठीक है। ये अपने-अपने दफ्तरों, कारखानों, अदालतों और विद्यालयों में यदि न जाएँ तो हमारे मोहल्ले की सेहत पर इसका कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है।

छब्बीस वर्ष की आजादी के बाद हमारे मोहल्ले के आजाद नागरिकों ने अपनी आजादी का पूरा-पूरा लाभ उठाना सीख लिया है। राशन की लाइन में कोई खड़ा है तो कोई बैठा है, कोई ऊँघ रहा है तो कोई सो रहा है। कुछ लोग शतरंज खेल रहे हैं तो कुछ ताश। डॉक्टर अपने मरीजों को दवाइयाँ बाँटता लाइन में सरक रहा है तो वकील अपने मुवक्किलों को समझाता है। शिक्षक अपने शिष्यों को ट्यूशन पढ़ाता हुआ खिड़की की ओर बढ़ रहा है तो चित्रकार अपने चित्रों में रंग भरता हुआ। एक जज साहब हैं जो अपनी अदालत का फैसला आज राशन की लाइन में ही सुनाने की सोच रहे हैं। एक टाइपिस्ट भी है जो टाइपराइटर साथ ले आया है, वह टाइप करता-करता खिड़की की ओर सरक रहा है। गोया बुद्धिजीवी से लेकर श्रमजीवी तक हर वर्ग का आदमी उस लाइन में अपने घरेलू फर्ज के साथ-साथ पेशागत फर्ज भी निभाने की कोशिश में है।

मानव के जीवन-काल में तीन घटनाएँ महत्त्वपूर्ण मानी गई हैं। ये हैं—जन्म, विवाह और मौत। तो साहब, ये तीनों प्रकार की घटनाएँ हमारे मोहल्ले की राशन की कतारों में घट चुकी हैं।

हो रहा था। रोशनलालजी पिछले दिनों दीपावली के अवसर पर राशन की दुकान पर एक-एक किलो घी का वितरण तो अपने दफ्तर में थे, लेकिन उनकी गर्भवती पत्नी लाइन में खड़ी थी। अचानक आरंभ हुई प्रसव-पीड़ा के बारे में उसने अपने पीछे खड़ी महिला से कह दिया। बस फिर क्या था? राशन की लाइन में हलचल शुरू हो गई। डॉक्टर और नर्स, जो वहीं उपस्थित थे, श्रीमती रोशनलाल की सहायता को आ गए। श्रीमती रोशनलाल ने वहीं राशन की लाइन में बैठकर एक पुत्ररत्न को जन्म दिया। रोशनलालजी को भी दफ्तर से बुला लिया गया। लोग उन्हें देने लगे बधाइयों-पर-बधाइयाँ। अन्य लोगों की भाँति श्री रोशनलालजी भी अब भूल चुके थे कि उनकी गर्भवती पत्नी राशन की लाइन में आखिर क्यों खड़ी थी? उसे एक किलो वनस्पति घी मिल भी चुका था या नहीं? उस समय वे मगन हो यही सोच रहे थे कि उनकी पत्नी ने एक लड़के को पैदा किया है। वे प्रसन्न मुद्रा में लोगों की बधाइयाँ स्वीकार रहे थे। सुना है श्री रोशनलालजी ने अपने इस लाल का नाम 'राशन लाल' रख छोड़ा है।

दूसरी घटना थी एक शायर और एक अध्यापिका के विवाह की। चालीस वर्षीय शायर साहब पचास वर्षीय अध्यापिका महोदया से राशन की लाइन में खड़े-खड़े अकसर इश्क फरमाया करते थे। हमने उन दोनों को आगे-पीछे ही खड़ा देखा है। शायर साहब अपनी नई-नई गजलें और नज्में अपने आस-पास खड़े लोगों को प्राय: सुनाते रहते थे। यहाँ उन्हें दाद भी खूब मिलती थी। उस दिन उन्होंने जब यह शेर पढ़ा—

मजनूँ भटका था जंगलों में लैला के लिए,

शायद उन दिनों राशन की कतारें नहीं थीं।

तो प्रशंसकों ने तारीफों के पुल बाँध दिए थे। अध्यापिका ने भी वाह-वाह करते हुए शायर साहब को सहानुभूति की नजर से देखा था। उसी दिन खिड़की तक पहुँचने से पहले शायर साहब ने अध्यापिका महोदया से कह ही दिया—'अगर आप जिंदगी भर के लिए मेरी श्रोता बन जाएँ तो कितना अच्छा हो!' उत्तर में अध्यापिका ने कहा था—'राशन की लाइन का श्रोता आपके शयनकक्ष का भी श्रोता हो सकता है, जरा आजमाकर तो देखिए।' बस फिर क्या था? राशन की लाइन में एक लहर सी दौड़ गई। सौभाग्य से दोनों कुँआरे थे और परिवार में अकेले भी। पंडितजी ने, जो एक किलो चीनी के लिए वहाँ मौजूद थे, लोगों का आग्रह मानकर शायर और अध्यापिका के फेरे वहीं फिरवा दिए। इस प्रकार बहुत दिनों से विवाह के इच्छुक दो कुँआरों को विवाह के पवित्र बंधन में बाँध दिया गया। आजकल वे राशन की लाइन में खड़ा करने हेतु एक पुत्र पैदा करने की सोच रहे हैं।

तीसरी घटना श्री सत्यरूपजी की मौत की थी। सत्यरूपजी हमारे मोहल्ले के बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति हुए हैं। महात्मा गांधी के सच्चे भक्त होने के कारण उन्होंने अपना सारा जीवन सत्य और अहिंसा के प्रचार में ही बिताया। गांधीजी यदि एक प्रार्थना सभा में शहीद हुए तो सत्यरूपजी हमारे मोहल्ले की राशन की कतार में।

उस दिन श्री सत्यरूपजी बीमार अवस्था में भी अपने सत्तर वर्षीय शरीर को राशन की पंक्ति में जोड़े खड़े थे। उनकी बारी आने से पूर्व राशन की दुकान बंद हो गई। श्री सत्यरूपजी ने 'हे राशन' कहकर दम तोड़ दिया। राशन की कतार में ही अरथी सजाकर सब लोग श्मशान घाट की ओर चल पड़े। 'राम नाम सत्य है' के स्थान पर 'राशन नाम सत्य है' बोला गया। श्मशान घाट पर पहुँचकर, आवश्यक रीतियाँ निबटाने के बाद वहीं पर एक शोक-सभा का आयोजन हुआ। लोगों ने मोहल्ले के नेताजी से दो शब्द बोलने का आग्रह किया और उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकारते हुए लगभग एक घंटे का भाषण दे डाला। नेताजी ने स्वतंत्रता-प्राप्ति से लेकर उसकी रजत-जयंती मनाने तक के अपने सभी कारनामे गिनवाए। सारा भाषण न तो मुझे याद है और न ही इस लेख में इसके लिए स्थान। हाँ, भाषण की अंतिम पंक्तियाँ इस प्रकार थीं—

'श्री सत्यरूपजी ने राशन की लाइन में अपना शरीर त्यागकर सारे देश के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। हमारे पूर्वजों की त्याग और तपस्या की भावना को पुनर्जीवित करके इन्होंने हमारे मोहल्ले का नाम रोशन किया है। हम इनके बहुत ही आभारी हैं। (लोगों की तालियाँ) इनकी आत्मा की शांति के लिए आइए, हम सब व्रत लें कि हम भी अपनी जान की परवाह न करते हुए राशन की कतार में पहले की तरह डटे रहेंगे।'

इसके पश्चात् मोहल्ले के लोग फिर राशन की दुकान की ओर चल पड़े।

❑

खास बनाम आम

साम्यवादियों ने समाज को दो वर्गों में विभाजित किया था—'हैव्स ऐंड हैव नॉट्स'। कोई हर्ज नहीं यदि हम दे दें इन्हें नाम—'खास और आम'। बढ़ रही है इनकी तादाद, आ रहा है स्वाद, दोनों जिंदाबाद। आम वे, जो चूसे जाते हैं और खास वे, जो चूसने का लुत्फ उठाते हैं। कालांतर में समाज ने नया रूप दिखाया और एक तीसरा 'मध्य वर्ग' उभरकर सामने आया। उसने नीचे नजर डाली तो आम, ऊपर देखा तो खास, दुविधा में पड़ हो गया उदास। न तो इस वर्ग को 'खास' ने स्वीकारा और न ही 'आम' ने इसे अपना कहकर पुकारा। दिशाहीन होकर बेचारा भटक गया और त्रिशंकु की तरह अधर में लटक गया। न तो 'आम' का मिला प्यार, न ही 'खास' की हुई दया और समय-समय पर चूसा भी आम से ज्यादा गया।

आमों के मौसम को हमारे देश के नेताओं ने अच्छी तरह पहचान लिया है और इसे 'विदेश-भ्रमण' का मौसम भी मान लिया है। हमारे खास-खास नेता विदेशों में जाते हैं, आमों से भरे टोकरे विदेशों के खास-खास नेताओं को भेंट करके मित्रता बढ़ाते हैं। रात को जब टकराते हैं जाम से जाम, तो हमारे नेता मूड में फरमाते हैं—'लीजिए, इन्हें चूसिए, ये हैं बहुत मीठे और रसीले हमारे देश के आम।' दोनों खासुलखास नेता प्रसन्न होकर करते हैं कोई लेन-देन-समझौता, होती है आपसी संबंधों में थोड़ी सी हलचल और यात्रा सफल। वहाँ से यदि थोड़ी-बहुत आर्थिक सहायता जाए मिल, तो नेताजी का चेहरा जाता है खिल। ऐसा होने पर वह अंदर-ही-अंदर मुसकराता है और आमों की गुठलियाँ वहीं छोड़ आता है। देश में लौटकर आम आदमी को आर्थिक सहायता के बारे में बताते हुए कहता है—'करके आया हूँ तुम्हारे हित का काम, साथ में लाया हूँ तुम्हारी गुठलियों के दाम'।

खास-खास नेताओं का विदेश भ्रमण हुआ आम आदमी के सहारे, लंबी यात्रा थी, काफी दिन वहाँ रुके भी थे, थके हुए हैं बेचारे। आम भी नहीं चूस पाए अपने प्रवास के दौरान, अपने ही आमों को भला कैसे चूसता मेहमान? घट सकती थी शान, हाँ देश में मिले अवसर और हो इनका सम्मान।

एक खासुलखास नेता का बँगला, बँगले का एक बड़ा कमरा, जहाँ जमा हुए सभी राजनीतिक दलों के खास-खास नेता। नेताओं के सामने परोसे गए नाना प्रकार के आम, 'आम चूस मीटिंग' था इस खास मीटिंग का नाम। आमों के नए-नए प्रयोगों और चूसने के भिन्न-भिन्न तरीकों पर होती थी यहाँ चर्चा, इसलिए आम आदमी को आमंत्रित नहीं किया गया। आदमी अर्थात् आदमी जो आम है, आम जनता अर्थात् जनता जो आम है। आदमी जब नेता हो जाता है तो बन जाता है खास, कभी आम से दूर, कभी आस-पास।

एक खास नेता ने आमों को ललचाई नजरों से देखा। एक आम को उठाकर हवा में उछाला, फिर सावधानी से लपककर बोला, 'वाह! क्या आम है! एकदम हमारे आम आदमी जैसा! कैसे भी इसे हम प्रयोग में लाएँ, कैसा भी हो हमारा व्यवहार, कमाल का सहयोग, भरपूर प्यार, सबकुछ सहने को हमेशा तैयार।' दूसरे खास ने स्पष्ट किया—'अरे, इन्हीं के कारण तो हम खास बने हैं, हमारे सीने तने हैं।' तीसरे खास ने ध्यान दिलाया—'विदेशों में तो ऐसे आम पैदा ही नहीं हो सकते हैं, वे तो इनकी खातिर तरसते हैं। पचास प्रतिशत तो हमारे ही देश में होता है आमों का उत्पादन, हम यदि इन्हें निर्यात करने में लगाएँ अपना मन, तो विदेशी मुद्रा के रूप में अर्जित कर सकते हैं काफी धन।' अब चौथे खास ने प्रश्न पूछ लिया—'पिछले वर्ष हम धोखा खा गए, पता नहीं क्यों लखनऊ से भेजे गए हमारे आम विदेश से वापस आ गए?'

खासुलखास नेता ने जानकारी दी—'वे आम कुछ हरे थे और उन्हें चाहिए थे पीले। नासमझ थे बेचारे, हमने समझाया तब समझे। हमारे आमों को रखकर वे यदि थोड़ा सब्र दिखाते तो हरे आम खुद पीले पड़ जाते। अरे, हम

से पूछते, हम सलाह देते, आम का अचार ही डाल लेते। डालना नहीं आता था तो हम सिखाते, वे और हम काहे को पछताते? हमसे बिना संपर्क किए मूर्खों ने वापस कर दिए। विदेशियों को कुछ ज्ञान दे मेरे राम, मीठे ही होते हैं हमारे हरे आम। वे चखकर यदि देख लेते तो भजन गाने लगते—'वाह! हरे आम हरे-हरे, जय श्रीराम हरे हरे।'

आमों के मौसम की तरह देश में चुनावों का भी मौसम आता है। उस समय आम आदमी का महत्त्व बढ़ जाता है। जैसे आम फलों का राजा कहलाता है, चुनाव के समय वैसे ही आम आदमी 'वोटर राजा' बन जाता है। जब नेता उसे वोटर राजा कहकर बुलाता है तो आम आदमी फूलकर कुप्पा हो जाता है और नेताजी की जय बोलता है, साथियों से बुलवाता है। प्रत्येक नेता हाथ जोड़कर आम आदमी की तारीफ करता हुआ नजर आता है—'हम तो सेवक हैं लोकतंत्र के, तुम मालिक हो, भाग्य विधाता हो, तुम ही हमारे माता-पिता, बंधु-सखा हो। हमें अपना सहारा दीजिए और वोट रूपी आशीर्वाद देने की कृपा कीजिए।'

चुनावों के मौसम में बढ़ जाती है राजनीतिक हलचल, कहीं गठबंधन, कहीं दलबदल। कुछ अलग होते हैं, कुछ हाथ मिलाते हैं और नेतागण दो श्रेणियों में बँट जाते हैं। एक का उद्देश्य 'सत्ता हथियाओ' और दूसरे का 'सत्ता बचाओ'। यहाँ मुझे एक घटना याद आ गई। एक व्यक्ति एक जनरल स्टोर में घुसा और एक-एक वस्तु को उठा-उठाकर देखने लगा। काफी समय हो गया तो स्टोर मालिक से नहीं रहा गया। वह पूछ बैठा, 'भाई साहब, आपको क्या चाहिए?' उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'कुछ नहीं, मुझे बस मौका चाहिए।' हमारे देश के नेताओं का यही हाल है, बस मौका चाहिए, सत्ता का सवाल है।

सत्ताविहीन आम आदमी को कहते हैं—'सत्ताधारियों ने तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं किया है, सिर्फ धोखा दिया है। आम को आम से लड़ाया है, राजनीतिक लाभ उठाया है। तुम्हें नफरत का जहर पिला दिया है, प्रजातंत्र का आधार ही हिला दिया है। इनके काल में हुआ नहीं कोई तुम्हारी भलाई का काम, नहीं रखा तुम्हारी सेहत का ध्यान, न सुरक्षा का इंतजाम। इस बार हमें परख लीजिए, हमें मौका दीजिए।'

सत्ताधारी बोलते हैं—'हे आदरणीय आम, वोटर राजा, हम हृदय से आभारी हैं, तुमने जो हमें प्यार और सहयोग दिया, पाँच साल के लिए कुरसियों पर बैठने का अवसर प्रदान किया। हमें दु:ख है, तुम्हारी सुध नहीं ली, बनी रही दूरियाँ, समय का अभाव था और कुछ थी हमारी मजबूरियाँ। हम जानते हैं कि तुमने पीड़ा झेली, कष्ट उठाए और हम तुम्हारे लिए कुछ खास नहीं कर पाए। लेकिन हम विदेश गए, मित्रता बनाई, दरियादिली दिखाई और तुम्हारी शान बढ़ाई। कृपा करके अब इतना ही कीजिए, हमें पाँच साल और दीजिए। इस बार तुम्हारी सेहत और सुरक्षा का हम पूरा प्रबंध कराएँगे, चूसना तो दूर तुम्हें हाथ तक नहीं लगाएँगे।'

आम आदमी बोला, 'अब हम आपको अच्छी तरह समझ गए हैं, आपके आश्वासनों को सुन-सुनकर थक गए हैं। यह ठीक है कि आप हमें हाथ नहीं लगाएँगे, लेकिन किसी विदेशी कंपनी से रस निकलवाकर पीएँगे या चाकू से कटवाकर खाएँगे।'

खैर, कहा-सुनी समाप्त हुई और वह दिन आया जब क्या बीमार क्या स्वस्थ, क्या हरे क्या पीले, क्या छोटे और क्या बड़े, सबके सब अपना-अपना कीमती वोट देने घर से निकल पड़े। हर चुनाव का यही निकलता है परिणाम, जीतता है नेता यानी कि खास और हारता है आदमी यानी कि आम। जब अपनों में से किसी को खास बना देती है आम जनता, फिर वह कभी आम नहीं बनता। आदमी तो नेता बन जाता है, लेकिन नेता कभी आदमी नहीं बन पाता है। खास बनने के बाद वह आम का कैसे ही प्रयोग करे, यह उसकी रजा है, उसी का कहना है कि आम को खाने से ज्यादा चूसने में मजा है। वास्तव में 'आम' है भोला-नासमझ और 'खास' है चालाक-समझदार। खास जानता है कि आम को चाकू से काटकर खाने पर हो सकता है विरोध, बढ़ सकती है तकरार, लेकिन मुँह लगा आम चुसने

को समझता है खास का प्यार, इसीलिए चुसने को तैयार।

जैसे होती है आम की गुठली, वैसे ही होती है आम आदमी की हड्डी। चूसने के बाद ये साफ नजर आती हैं और जिंदगी भर की कहानी कह जाती हैं। फिर भी ये बड़े काम की कहाती हैं। चुनाव के समय नेता आम आदमी को समझाता है, वोट बड़ा कीमती है, उसे बताता है। इससे जाहिर होता है कि कीमत होती है एक-एक वोट की और उसे खरीदने के वास्ते जरूरत होती है नोट की। आम आदमी कितना ही चुस जाए, उसकी हड्डी वोट तो देगी ही और बदले में कीमत भी लेगी ही, हो सकता है आम की गुठली और आदमी की हड्डी का किसी व्यक्ति ने अच्छी तरह अध्ययन किया हो और 'आम के आम और गुठलियों के दाम' मुहावरे को जन्म दिया हो।

❑❑❑